त्रिलोक-अकृत्रिम-जिनालय पूजा

प्रकाशक :
श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-३६४२५०

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प-२०१

श्री

त्रिलोक-अकृत्रिम-जिनालय पूजा

卐

कविवर पण्डित श्री टेकचंदजी रचित
'तीन लोक पूजा' का संक्षिप्त संस्करण

卐

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ़–३६४२५०

प्रथमावृत्ति : वीर नि.सं. २५२८ वि.सं. २०५८ प्रत २५००
द्वितीयावृत्ति : वीर नि.सं. २५३६ वि.सं. २०६६ प्रत १०००

श्री त्रिलोक-अकृत्रिम-जिनालय पूजाके
※ स्थायी प्रकाशन पुरस्कर्ता ※
श्री मधुरभाई महेता तथा ब्र. कोकिलाबेन,
रूपाबेन, प्रवीणाबेन खारा, सोनगढ

यह शास्त्रका लागत मूल्य रु. २०=०० है। मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस आवृत्तिकी किंमत रु. १६=०० होती है। तथा श्री कुंदकुंद-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट हस्ते स्व. शांतिलाल रतिलाल शाहकी ओरसे ५०% आर्थिक सहयोग प्राप्त होनेसे यह शास्त्रका विक्रय-मूल्य रु. ८=०० रखा गया है।

मूल्य : रु. ८=००

: मुद्रक :
कहान मुद्रणालय
जैन विद्यार्थी गृह कम्पाउण्ड,
सोनगढ-३६४२५० ✆ : (02846) 244081

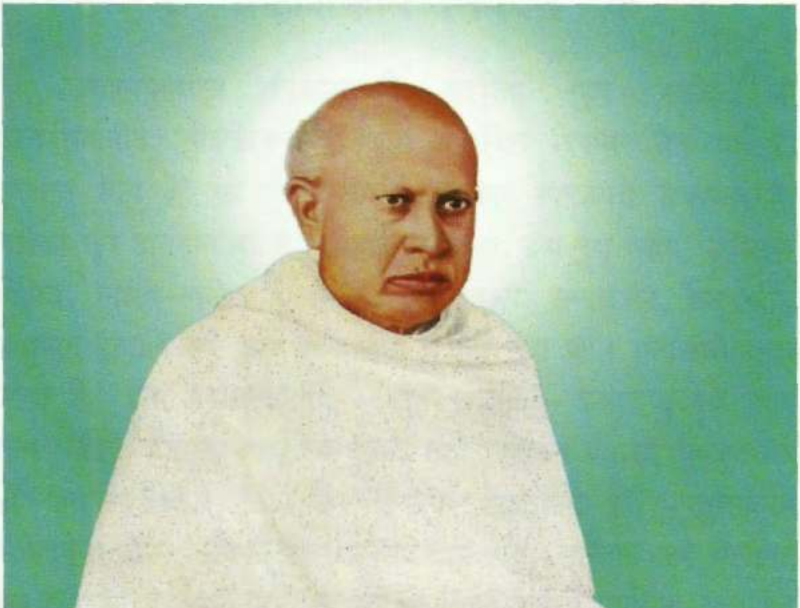

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

❋ प्रकाशकीय निवेदन ❋

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकरभगवन्तों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैन धर्म ही सनातन सत्य है' यह युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, आत्माका शुद्ध स्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ उनके परम प्रतापसे इस काल सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वोंके—गहन तथ्योंके—रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सही पहिचान कराकर मुमुक्षुसमाज पर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे ही मुमुक्षुसमाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी सत्य प्रवृत्ति साभिरुचि, सोल्लास एवं नियमित चल रही है। वे स्वयं भी जिनेन्द्रभक्तिमें नियमितरूपसे उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनीत प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर शुद्धाम्नायी जिनमन्दिरों एवं वीतराग दिगम्बर जिनबिम्बोंसे विभूषित हो गया है।

अध्यात्मसाधनाकी पवित्र तीर्थभूमि सुवर्णपुरी (सोनगढ)में, परम पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामीके भक्तरत्न स्वानुभवविभूषित धन्यावतार प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेनकी जिनेन्द्रभक्तिभावभीनी प्रशस्त प्रेरणासे प्रसंगोपात्त अनेकविध मण्डलविधान पूजाएं होती रहतीं हैं। और इसके सन्दर्भमें ट्रस्टकी ओरसे अनेकविध मण्डलविधानकी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। उसी श्रेणीमें यह 'श्री त्रिलोक पूजाविधान', सुवर्णपुरीके मानस्तम्भ प्रतिष्ठाकी सुवर्ण जयन्तीके शुभ अवसर पर प्रकाशित करते हुए प्रसन्नता अनुभूत हो रही है।

यह 'श्री त्रिलोक–पूजाविधान' कविवर पण्डित श्री टेकचन्द्रजी द्वारा

रचित 'तीन लोक पूजा' का ही संक्षिप्त संकलन है। इसका यह प्रस्तुत संस्करण, दिल्लीके 'जैन साहित्य सदन', श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर द्वारा प्रकाशित 'तीन लोक पूजा'के आधारसे प्रकाशित किया गया है। एतदर्थ ट्रस्टकी प्रकाशन-समिति उक्त प्रकाशकके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करती है।

पं. श्री टेकचन्द्रजीने पंचमेरु–नन्दीश्वरविधान, षोडशकारणभावना-विधान, त्रिलोकसारविधान, दशलक्षणविधान और रत्नत्रयविधान भी बनाये हां, जो मुद्रित भी हो चुके हैं।

आशा है कि सुवर्णपुरी (सोनगढ) के ६३ फूट उन्नत भव्य मानस्तंभके प्रतिष्ठाकी सुवर्ण जयन्तीके अवसर पर इस 'श्री त्रिलोक–पूजाविधान' के संक्षिप्त संकलनके प्रकाशनसे मुमुक्षुसमाज अवश्य लाभान्वित होगा।

वि. सं. २०४६,
कार्तिक कृष्णा ३० (दीपावलि)
मानस्तंभ–सुवर्ण जयन्ती

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि. जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट,
सोनगढ़–३६४२५०

त्रिलोक-अकृत्रिम-जिनालय पूजा
(संक्षिप्त संस्करण)की

* अनुक्रमणिका *

अंक	पूजा	पृष्ठ
१	मंगलाचरण	१-४
२	अकृत्रिम चैत्यालय-जिनपूजा	४-९
३	भवनवासी देवोंके भवनोमें स्थित जिनालय पूजा	९-१२
४	भवनवासीके चैत्यवृक्ष एवं मानस्तंभके जिनबिम्बोंकी पूजा	१२-१८
५	भवनवासी-इन्द्रोंके भवन संबंधी जिनचैत्यालयोंकी पूजा	१९-२२
६	अधोलोक मध्यलोकमें व्यन्तरदेव सम्बन्धी अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	२३-२८
७	मध्यलोक संबंधी जिन चैत्यालय पूजा	
	(१) जंबूद्वीप संबंधी जिन चैत्यालय पूजा	२९-३५
	(२) धातकीखंड जिन चैत्यालय पूजा	३६-४६
	(३) पुष्करार्द्धद्वीप संबंधी जिन चैत्यालय पूजा	४६-५६
	(४) मानुषोत्तरपर्वत संबंधी जिन चैत्यालय पूजा	५७-६१
	(५) नंदीश्वरद्वीप संबंधी जिन चैत्यालय पूजा	६१-६५
	(६) कुंडलगिरि संबंधी जिन चैत्यालय पूजा	६६-६९
	(७) रुचिकगिरिसंबंधी जिन चैत्यालय पूजा	७०-७४
८	ज्योतिर्लोक संबंधी जिन चैत्यालय पूजा	७५-८०
९	उर्ध्वलोक सम्बन्धी जिन चैत्यालय पूजा	८०-८८
१०	लोकाग्रस्थित सिद्ध परमेष्ठी पूजा	८१-९४
११	समुच्चय जयमाला	९५
१२	मानस्तंभ-बिराजमान श्री सीमंधर जिन पूजा	९६-१००

१३	मानस्तंभ-चतुर्दिश बिराजमान श्री सीमंधर जिन पूजा	१००
	पूर्वदिशा	१००-१०२
	दक्षिणदिशा	१०२-१०४
	पश्चिमदिशा	१०४-१०६
	उत्तरदिशा	१०६-१०६
	जयमाला	११०-१११

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर सहलीहूआइं मज्झ णयणाइं।
चित्तं गत्तं च लहुं अमिएण व सिंचियं जायं॥

❀

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर दिट्ठिहरासेसमोहतिमिरेण।
तह णट्ठं जइ दिट्ठं जहट्ठियं तं मए तच्चं॥

❀

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर परमाणंदेण पूरियं हिययं।
मज्झ तह जह मण्णे मोक्खं पिव पत्तमप्पाणं॥

–मुनि श्री पद्मनन्दी

हे जिनेन्द्र! आपका दर्शन होने पर मेरे नेत्र सफल हो गये तथा मन और शरीर शीघ्र ही अमृतसे सींचे गयेके समान शान्त हो गये हैं।

हे जिनेन्द्र! आपका दर्शन होने पर दर्शनमें (सम्यग्दर्शनमें) बाधा पहुँचानेवाला समस्त मोह (दर्शनमोह) रूप अन्धकार इस प्रकार नष्ट हो गया कि जिससे मैंने यथावस्थित तत्त्वको देख लिया है–सम्यग्दर्शनको प्राप्त कर लिया है।

हे जिनेन्द्र! आपका दर्शन होने पर मेरा अन्तःकरण ऐसे उत्कृष्ट आनन्दसे परिपूर्ण हो गया है कि जिससे मैं अपनेको मुक्तिको प्राप्त हुआ ही समझता हूँ।

❀ श्री मानस्तंभ–स्तुति ❀

[सुवरणपुरीमां प्रतिष्ठा प्रसंगे]

(राग–कोईनो लाडकवायो)

स्वर्णपुरे स्वाध्यायसुमंदिर, जिनगृह गुरुजी लाया,
समवसरण, प्रवचनमंडप *जिनधर्मविभव लहराया;
*धर्मध्वज आया आया रे,
भविक–उर हरख हरख छाया.

घोर भवाटवी मार्ग भूल्युं जग, सूझे क्यांय न आरो,
जिनदरबार सुमार्ग बतावी, तुं जग–रक्षणहारो;
–धर्मध्वज तुं आधारो रे,
भविकनो तुं ध्रुव तारो रे....स्वर्ण०

पीठ प्रथम श्रीकुंद–सीमंधर मिलन मनोहर सोहे,
नेमप्रभु, वसु मंगळ, पावन परमेष्ठी मन मोहे;
–दृश्य शां मधुमधुरा लागे,
उरे शा भाव अहो! जागे.

पीठ बीजी गुरु कहान बिराजे, ज्योत विदेही भरतमां,
श्रुत सोंपे धरसेन, कुंदमुनि ज्योत भरे भाजनमां;
–ज्योतिधर जय जय हो जगमां;
अमोने अजवाळो उरमां....स्वर्ण०

पीठ त्रीजी गौतम–ध्वजदर्शन, केवळ मल्लिकुंवरने,
देव करे अभिषेक, इक्षुरसदान ऋषभमुनिवरने,

★ श्री मानस्तंभको धर्मवैभव एवं धर्मध्वज भी कहा जाता है।

—धन्य जिन-गणधर-मुनिवरने,
मुक्तिपुर-पंथ-प्रवासीने.

पीठत्रयी पर मंदिर मनहर, स्वस्तिक मंगळकारी,
घंट-माळ-अभिराम दंड पर ऊंचे देरी अनेरी;
—धर्मध्वज गगनविहारी रे,
भविक-मन पावनकारी रे....स्वर्ण०

नीचे उपर नाथ चतुर्दिश, पद्मासन अति प्यारा,
पाद पडे त्यां तीरथ उत्तम, दृष्टि पड्ये भव पारा;
—नाथ मुज आया आया रे,
सुवर्णे अमृत ऊभराया.

चेतनबिंब जिनेश्वरस्वामी, ध्यानमयी अविकारा,
दर्पण सम चेतन-पर्यय-गुण-द्रव्य दिखावनहारा;
—नाथ चिद्रूप दिखावे रे,
परम ध्रुव ध्येय शिखावे रे....स्वर्ण०

विश्वदिवाकर नाथ सीमंधर, कुंदनयनना तारा,
जगन्निरपेक्षपणे जगन्नायक, वंदन कोटि अमारां;
—तात जगतारणहारा रे,
जगत आ तुजथी उजियारा.

हे जिनवर! तुज चरणकमळना भ्रमर श्री कहान प्रभावे,
जिन पाम्यो, निज पामुं अहो! मुज काज पूरां सहु थावे;
—आश मुज करजो रे पूरी,
उभय अणहेतुक-उपकारी....स्वर्ण०

—रचयिता : हिंमतलाल जे० शाह

त्रिलोक-अकृत्रिम-जिनालय पूजा

[कविवर पं० टेकचन्दजी कृत 'तीन लोक पूजा'का संक्षिप्त संस्करण]

(मंगलाचरण)

(दोहा)

लोकाकाश प्रदेशमें, भवन तीन जिंह थानि।
तहां अकृत्रिम जिन-भवन, ते पूजौं थुति आनि॥१॥

(चौपाई)

सुरपति तो सब थानिक यजैं, सहित शची नाना पुनि सजैं।
द्वीप अढाई जे जिनगेह, सुर खग पूजैं बहु-पुन लेह॥२॥

(अडिल्ल छंद)

शक्ति हीन हम दूर जाय सकते नहीं।
भक्ति भरे चित लाय यजैं इसही मही।
अष्ट द्रव्य शुभ लाय सु सन्मुख आयकै।
भनने लागैं भक्ति महा गुण गायकै॥३॥

(पद्धरी छंद)

लख अधोलोक खर पंकभाग, तहां देव असुरके भवन जाग।
इक एक भवन जिनगेह एक, ते नमौं अंग-नय छांडि टेक॥४॥

(सोरठा)

असुर देवके ठाम, सात कोडि बहतर लखा।
एते ही जिनधाम, सो मैं मन वच तन यजौं॥५॥

(गीता छंद)

देव ही जहं पूजि करि, महा पुन्य फल उपजावही।
बहु करै भक्ति विनययुत है, कंठ जिन गुण गावही॥

तहां मनुषका नहि गमन जानों, पुन्य बिन दरशन नहीं।
इम जानि उरमें भाय भावन, पूजि हौं इसही मही।।६।।

(चाल पंचमंगल)

असिय मेरु गजदंता बीस बखानिये।
असि वक्षार कुलाचल तीस प्रमानिये।
खग गिरि एक सो सत्तरि दश वृछ टामजी।
इक्ष्वा मनु कुण्डल रुचक चव चव धामजी।।
लख धाम बावन दीप नंदीश्वर विषै चब दिशि सही।
सब मिलि जु चवशत फिरि अटावन सकल यह गिनती भई।
जिनथान इतने लोक मधि मैं नमौं मन वच कायजी।
द्वय हीन चवशत लोक नरमें शेष पशु थल पायजी।।७।।

(वेसरी छंद)

सुरग लोकमें लख चोरासी, सहस सत्याणव ऊपरि भासी।
तेइस अधिक कहे जिनगेहा, सो मैं सब पूजौं करि नेहा।।८।।

(चाल मुनियानंद)

तीन ही लोकके सकल मिलिवाइये, आट कोडि छप्पन लाख जु भाइये।
सहस सत्याणवै च्यारिशत है सही, अधिक इक्यासिया सर्व पुनि की मही।।६।।
और जिन बीस जे सासते राज हैं, क्षेत्र विदेहमें तीर्थ यह वाज्य है।
ते सकल देव अरहंत पद है सही, ते जजौं अर्घ धरि जानि बहु पुन मही।।१०।।
सिद्ध गुन आठ मय आट कर्म नासिया, चेतनारूप सब लोक तिन भासिया।
शुद्ध बिन मूरती ज्ञानकेवल धरा, ते जजौं अर्घ ले पुन्यदायक खरा।।११।।

(चाल वीरजिनन्द)

गुनछतीस के धारतै जी, आचारज सुखदाय, ते हौं पूजौं अर्घ सौं जी।
मन वच तन सुभ लाय जी, भाई आचारज पद धार।।१२।।

(चाल सुनि भाई रे)

बीस पांच गुन धारिजे, सुनि भाई रे।
सो भी उपाध्याय जानि चेत मन भाई रे।
तिनके पद वसु द्रव्य तैं, सुनि भाई रे।
पूजौं भक्ति सु आनि, चेत मन भाई रे॥१३॥

(चाल छंद)

गुन बीस आठ जहं पाई, तन विरकत वरती लाई।
यह साधनिको सुखदाई, भवि पूजौं मन वच काई॥१४॥

(चाल जोगीरासा)

येही पांचौं पद परमेष्ठी सब विधि मंगलदाई।
येही पंच परम गुरु कहिये इन थुति शिव-सुख दाई।
फेरि नमौं जिनमुखकी वानी सकल तत्त्व परकासी।
ये सब होय सहाय हमारे तातैं इन थुनि भासी॥१५॥

(चौपाई)

जंबूद्वीप जिनालय जोय, तिनकी पूजा यामैं सोय।
जो भवि भाव होई इसतनौं, तो इतनौं ही पाठ सुन भनौं॥३१॥

जो भवि द्वीप अढाई तने, जिनथलपूजन मनसा ठने।
तो इतनौं ही पाठ सुभनौ, पुन्य लेय अगले अघ हनौं॥३२॥

तेरह द्वीप तनो जिनगेह, जाको भवि पूजै कर नेह।
सो भी पाठ बन्यौं इस मांहि, बांचो करि विधान शुभ थांहि॥३३॥

जो भवि कोई सकल ही पाठ, तीन लोक जिन मंदिर ठाठ।
पूजो चाहै पुन्यके काज, तो बांचो पुन्य ल्यो शिवराज॥३४॥

यह चव पाठ कहे इस मांहि, च्यारि विधान तनी विधि ठाहि।
जो विधान विधि करि भवि करै, ताविधि मंडल रचना भरे॥३५॥

पंच वरन बानी बनवाय, रंग बनावै अति सुखदाय।
यथाजोग्य मंडल विधि बनै, सो पूजा अघकुल कौ हनै॥३६॥
तीन लोक जिन पूजा करै, सो त्रयलोक जनममृत हरै।
होय अमूरति चेतन देव, सुरनर असुर करै तिस सेव॥३७॥
यह पूजा विधि जो भवि धरै, सो भवि इम आलोचन करै।
यह पूजा सुर हरितैं होय, कै चक्री आदिक नृप सोय॥३८॥
कै बहु लच्छिधार जे होय, नृपति तथा जग-जेट जु कोय।
तिनतैं यह विधि पूरन थाय, मैं पुन-अल्प लहूँ अधिकाय॥३९॥
मोतैं यह विधि किमि बनि आय, मैं तो पुन वसि भावन भाय।
इत्यादिक आलोचन करै, सो जिय पूजा फलकौ धरै॥४०॥

❀

अकृत्रिम चैत्यालय जिनपूजा

(चौपाई)

आठ करोड रु छप्पन लाख, सहस सत्याणव चतुशत भाख।
जोड इक्यासी जिनवरथान तीन लोक आह्वान करान॥

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिम चैत्यालयानि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(त्रिभंगी)

क्षीरोदधि नीरं, उज्वल सीरं, छान सुचीरं भरि झारी।
अति मधुर लखावन परम सुपावन, तृषा बुझावन गुणभारी।

वसु कोटि सु छप्पन लाख सत्तानव सहस चार सत इक्यासी।
जिनगेह अकीर्तिम तिहुं जग भीतर, पूजत पद ले अविनाशी ।।

ॐ ह्रीं तीनलोक संबंधी आठ करोड़ छप्पन लाख सतानवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिम चैत्याल्येभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि पावन चंदन बावन, ताप बुझावन घसि लीनों;
धरि कनक कटोरी द्वै कर जोरी, तुम पद ओरी चित्त दीनो। वसु०
(चंदनं)

बहुभांति अनोखे तंदुलचोखे, लखि निरदोखे हम लीने;
धरि कंचन थाली तुम गुणमाली, पुंज विशाली कर दीने। वसु०
(अक्षतम्)

शुभ पुष्प सुजाति है बहुभाँति, अलि लिपटाती लेय वरं;
धरि कनक रकेबी कर गह लेवी, तुम पद जुगकी भेट धरं। वसु०
(पुष्पं)

खुरमा जु गिंदौडा बरफी पेड़ा, घेवर मोदक भरि थारी;
विधिपूर्वक कीने घृतपय भीने, खंडमें लीने सुखकारी। वसु०
(नैवेद्यं)

मिथ्यात महातम छाय रह्यो हम, निजपरपरिणति नहि सूझे;
इह कारण पाकें दीप सजाकें, थाल धराकें हम पूजे। वसु०
(दीपं)

दशगन्ध कुटाके धूप बनाके, निजकर लेके धरि ज्वाला;
तसु धूम उडाई दशदिश छाई, बहु महकाई अति आला। वसु०
(धूपं)

बादाम छुहारे श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे द्राखवरं;
इन आदि अनोखे लखि निरदोखे, थाल पजोखे, भेट धरं। वसु०
(फलं)

जल चंदन तंदुल कुसुम रु नेवज, दीप धूप फल अर्घ रचौं,
जयघोष कराउं, बीन बजाउं, अर्घ चढाउं खूब नचौं। वसु०

ॐ ह्रीं तीनलोकसंबंधी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अधोलोक जिन आगम साख, सात कोडि अरु बहत्तर लाख।
श्री जिनभवन महा छवि देई, ते सब पूजौं वसु विधि लेई॥

ॐ ह्रीं अधोलोकसंबंधी सात करोड बहत्तर लाख अकृत्रिमजिन-चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक जिनमंदिर ठाट, साढे चार शतक अरु आठ।
ते सब पूजौं अर्घ चढाय, मन वच तन त्रय जोग मिलाय॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधी चारसौ अठावन अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

ऊर्ध्वलोकके मांहि भवन जिन जानिये।
लख चौरासी सहस सत्याणवे मानिये॥
तापै धरि तेईस जजौं शिर नायके।
कंचनथाल मझार जलादिक लायकै॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोक संबंधी चौरासी लाख सत्याणवे हजार तेइस अकृत्रिम-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकोटि छप्पन लाख उपर, सहस सत्याणव मानिये।
शत चारपै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये॥
तिहुं लोक भीतर सासते सुर असुर नर पूजा करैं।
तिन भवनको हम अर्घ लेकैं पूजिहैं जगदुख हरैं॥

ॐ ह्रीं तीनलोकसंबंधी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

अब वरणों जयमालिका, सुनों भव्य चित लाय।
जिनमंदिर तिहुं लोकके, देहुं सकल दरसाय।।

(पद्धरी छंद)

जय अमल अनादि अनंत जान, अनिर्मित जु अकीर्तम अचल थान।
जय अजय अखंड अरूप धार, षट् द्रव्य नहीं दीसै लगार।।
जय निराकार अविकार होय, राजत अनंत परदेश सोय।
जै शुद्ध सुगुण अवगाह पाय, दश दिशमांही इह विधि लखाय।।
यह भेद अलोकाकाश जान, ता मध्य लोक नभ तीन मान।
स्वयमेव बन्यो अविचल अनंत, अविनाशी अनादि जु कहत संत।।
पुरुषाकार ठाडो निहार, कटि हाथ धारि द्वै पग पसार।
दक्षिन उत्तर दिशि सर्व ठौर, राजू जु सात भाख्यो निचोर।।
जय पूर्व अपर दिश घाट बाढ़ि, सुन कथन कहूं ताको जु साधि।
लखि श्वभ्रतलें राजू जु सात, मधिलोक एक राजू रहात।।
फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच, भूसिद्ध एक राजू जु सांच।
दश चार ऊंच राजू गिनाय, षट द्रव्य लये चतु कोण पाय।।
तसु वात वलय लपटाय तीन, इह निराधार लखियो प्रवीन।
त्रस नाड़ी तामधि जान खास, चतु कोन एक राजू जु व्यास।।
राजू उतंग चौदह प्रमान, लखि स्वयंसिद्ध रचना महान।
ता मध्य जीव त्रस आदि देय, निज थान पाय तिष्ठै भलेय।।
लखि अधो भागमैं श्वभ्र थान, गिन सात कहे आगम प्रमान।
षट् थानमांहिं नारकि बसेय, इक श्वभ्रभाग फिर तीन भेय।।

तसु अधो भाग नारकि रहाय, फुनि ऊर्ध्व भाग द्वय थान पाय।
बस रहे भवन व्यंतर जु देव, पुर हर्म्य छजै रचना स्वमेव॥
तिहं थान गेह जिनराज भाख, गिन सात कोटि बहतरि जु लाख।
ते भवन नमों मन वचन काय, गति श्वभ्र हरनहारे लखाय॥
पुनि मध्यलोक गोलाअकार, लखि दीप उदधिरचना विचार।
गिन असंख्यात भाखे जु संत, लखि स्वयंभूरमन सबके जु अंत॥
इक राजुव्यासमें सर्वजान, मधि लोक तनो इह कथन मान।
सब मध्य द्वीप जंबू गिनेय, त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय॥
इन तेरहमैं जिनधाम जान, शत चार अठावन है प्रमान।
खग देव असुर नर आय आय, पद पूज जाय शिर नाय नाय॥
जय ऊर्ध्व लोक सुर कल्पवास, तिहंथान छजै जिनभवन खास।
जय लाख चौरासी पै लखेय, जय सहस सत्याणव और ठेय॥
जय बीसतीन फुनि जोंड देय, जिनभवन अकीर्तम जान लेय।
प्रति भवन एक रचना कहाय, जिनबिंब एक शत आठ पाय॥
शतपंच धनुष उन्नत लसाय, पद्मासनजुत वरध्यान लाय।
शिर तीन छत्र शोभित विशाल, त्रय पादपीठ मणिजडित लाल॥
भामंडलकी छबि कौन गाय, फुनि चंवर ढुरत चौसठि लखाय।
जय दुंदुभि रव अद्भुत सुनाय, जय पुष्पवृष्टि गंधोदकाय॥
जय तरु अशोक शोभा भलेय, मंगलविभूति राजत अमेय।
घट तूप छजै मणिमाल पाय, घटधूम्र धूम्र दिग सर्व छाय॥
जय केतु पंक्ति सोहै महान, गंधर्व देवगन करत गान।
सुर जनम लेत लखि अवधि पाय, तिह थान प्रथम पूजन कराय॥
जिनगेह तणो वरनन अपार, हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार।
जय देव जिनेश्वर जगतभूप, नमि नेम मंगे निज देह रूप॥

ॐ ह्रीं तीन लोकसंबंधी आठ करोड़ छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

तीन लोकमें शाश्वते श्री जिनभवन विचार।
मन वच तन करि शुद्धता पूजों अरघ उतार ॥

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

भवनवासी देवोंके भवनोंमें स्थित अकृत्रिम जिनालय एवं मानस्तंभ पूजा

(छंद हरिगीत)

दश जाति भवन प्रकार देव सु, थान तिनके में सही।
जिन थान मणिमय सुभग ऊंचे, पाप हरनेकी मही।
तहां देव पूजा करै थुति तैं, वांछिका शिव स्थानके।
जे थान जिन इस जगह स्थापन कर जजों अघ हानिके ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासी देवस्थानस्थित अकृत्रिम चैत्यालय अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासी देवस्थानस्थित अकृत्रिम चैत्यालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं दशप्रकार-भवनवासी देवस्थानस्थित अकृत्रिम चैत्यालय अत्र मम सन्निहितो, भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीत)

वर नीर निरमल क्षीरदधि को, सुभग पातरमें धरों।
ले सात कोडि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों।

तिस लाभतैं अघ मैल सब ही, धुवै मम आतम तनों।
इमि जान मन वच काय शुध कर, मुख थकी जिन थुति भनों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति लक्ष-जिनालयेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।१।

शुभ लाय चंदन भली गंध जु, निर्मला घसिये सही।
धरि रतन पातर मांहि करले, भक्ति जुत परणति ठही।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों।
तिस लाभतें भव ताप सारी, नाश कर समता धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।२।

अति महा उज्ज्वल गंध जुत विन खंड अक्षत लाय हों।
धर सुभग पातर लेय जुत कर, चित्त अति हुलसाय हों।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों।
अक्षय निधिकी प्राप्ति काजे जिनचरण अक्षत धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।३।

बहु फूल सुभग सुगंध आछे, भंवर गुंजत आनिये।
तिन माल कर धरि आपने कर, धनि अनंदित मानिये।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों।
तिस लाभतें मद काम को हरि, शीलगुण उज्ज्वल करों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।४।

शुभ तुरत षट् रसमई चरुवर, नयनको सुखदायजी।
धरि कनक पातर भक्ति जुत हम, आपने कर लायजी।

पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों।
तिस लाभसैंती भूख वेदन नाश कर सुख पद धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा। ५।

नव दीप तमहर रतनका कर, कनक थाल विषैं लिया।
शुभ काय मन वच ठानि अपनी, पूज्य जिन दिश चित किया।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों।
तिस फलै शिवमग मांहि तम-अज्ञान हरि शिवपद धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा। ६।

कर धूप दश परकार गंध जु, वह्निमें खेऊं सही।
तिस धूम नभमें गमन कीनों, शिखा मानों जस लही।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों।
तिस लाभतें सब कर्म ईंधन ध्यान अगनीमें धरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा। ७।

बहु फल बिदाम नरेल खारक, लोंग आदि मिलाइये।
ले दोय करमें विनय धरि, चित सुभगको उमगाइये।
पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भवन जिन पूजा करों।
तिस फलैं कर्म निवार आठों, मोक्षफलकों अनुसरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो फलम् निर्वपामीति स्वाहा। ८।

शुचि जल सु चंदन अखत पुष्प रु, दीप धूप फला चरू।
वसु द्रव्य मेलि सु अरघ करि धरि भले भावन आचरूं।

पद सात कोटि सु लाख बहतरि, भुवन जिन पूजा करों।
तिस फलै और न चाह मेरे जनम मरण जरा हरों॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-सप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। ६।

अब असुर नागं स्तनित दीप रु, उदधि विद्युत जानिये।
फिर जानि सुपरन दिक्कुमारा, अगनि वात प्रमाणिये।
इन भवनमें जिन सदा साश्वत, जजौं हैं जो बिन किये।
तिन सबनिको मैं अर्घ तैं, धरि भक्ति पूजों शुभ हिये॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसंबंधि-सप्तकोटि-सप्तति-लक्ष-जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। १०।

❀

भवनवासीके चैत्यवृक्ष एवं मानस्तंभके

जिनबिम्बोंकी पूजा

(छंद हरिगीतका)

दशजाति देव सु भवनवासी, तिन थलों भिन भिन सही।
है चैत्यवृक्ष सुहेट तिनके, प्रतिमा चउ दिश कही॥
एक इक दिशामें पांच प्रतिमा, एक वृक्ष तल बीस हैं।
इक एक आगे मानथंभा, एक प्रतिमा शीश है॥

ॐ ह्रीं चैत्यवृक्ष-मानस्तम्भ-सम्बन्धि-जिन! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्री चैत्यवृक्ष-मानस्तम्भ-सम्बन्धि-जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं चैत्यवृक्षमानस्तम्भसंबंधि-जिन! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

भवन असुरकुमारके बीच, चैत्य अस्वथ वृक्ष है।
तिन हेट प्रतिमा बीस चौ दिशि, एक दिशिमें पंच हैं।
सब रत्नमय जिन बिंब जानो, और शोभा अति कही।
ते बिंब हैं वृक्ष चैत्य नीचे, पूजि है वसु द्रव्य ही॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसंबंधि-जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन एक एक सुबिंव आगे, एक मानस्तम्भ है।
तिस मानथंभ सुशीश ऊपरि, बिंब जिनके सुदृढ़ हैं।
इमि एक दिशिके स्तम्भ ऊपरि, बिंब सात विराजही।
सब थंभ के टाईस जिनवर, पूज तिन पद साजही॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवनेषु मानस्तंभ-जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन नागकुमारके तह, सप्तवर्णा तरु सही।
तिस हेट चउदिशि बीस प्रतिमा, रतनमय जिनकी कही।
तिस प्रतिमाके पांय पूजों द्रव्य आट चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु नासि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेषु सप्तपर्ण चैत्यवृक्षसंबंधी चतुर्दिक विंशति प्रतिबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर नागभुवन सु चैत्य तरुवर, बिंब प्रभुके राजही।
जिनबिंब आगे एक एक सु, थंभ बिंबजुत साजही।
तिन प्रतिमाके पांय पूजों, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि वसु, नासि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं नागकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसंबंधी विंशति मानस्तंभ प्रतिबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन सुपरण विषै वृछ है, चैत्य मानस्तंभ ही।
तिनके संबंधी बिंब जिनके, हैं सकल पुनिकी मही।

तिन प्रतिमाके पांय पूजों, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि, सब नासि हैं भय खायके ।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन सुपरण चैत्यतरु है, स्तंभ मानस ही सही।
जिन प्रतिमा करि सहित तीरथ, पूजि हैं सुरकी मही।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खायके ।।

ॐ ह्रीं सुपर्णभवनेषु चैत्यवृक्षस्य मानस्तंभसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर भवन द्वीपकुमारके हैं, चैत्यतरु तल बिंबही।
तिन बिंब आगे मानथंभा, शीश जिनप्रतिमा कही।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि हैं भय खायके ।।

ॐ ह्रीं दीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भुवन द्वीपकुमार भीतर, चैत्यतरु तल बिंब हैं।
तिन बिंब आगे मानथंभा, प्रतिमा जुत हेट हैं।
तिन प्रतिमाके पांय पूजों, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके ।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य मानस्तंभसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर उदधिकुमार सु भवन भीतर, चैत्यंतरु तलि बिंब है।
चव दिशाके गिन एकबीसी, लखे होय अचम्भ है।

तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य समस्त जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिन उदधिकुमार सु भवन मांहि, चैत्यतरु अति सुख मही।
तहां मानथंभ सु बिंब आगे, अकृत प्रतिमा शुभ कही।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिकमानस्तंभसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत भवनके चैत्यतरु हैं, अधिक शोभाको धरे।
तिस चतुर्दिशके हेट ताकी, बिंब जिन अघको हरे।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्युतभवन सु चैत्यतरु तल, स्तंभ मानस है सही।
जिनबिंब तह जिनसारसे हैं, रूप लक्षण गुण मही।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक सर्व मानस्तंभसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब भवन स्तनितकुमारके बिच, चैत्यतरु चव दिश कहै।
जिनबिंब बीस अनूप फलदा, राजि है सब अघ दहै।

तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन स्तनितकुमारके लखि, चैत्यवृक्ष सु चवदिसी।
तिन बिंब मानसथंभ उपरि वीस जिन प्रतिमा लखी।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिकविंशति मानस्तंभसंबंधि जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन दिक्कुमारके बिच चैत्यवृक्ष सुजानिए।
चव दिशाके बीस बिंबसु, सुरां सेवित मानिए।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिकसंबंधि विंशति जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्कुमार सु चैत्य चवदिशि, भुवन जिनवर सुखकरा।
बीस मानस्तंभ आगे, बीस जिनवर नुत खरा।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य विंशति मानस्तंभसंबंधि जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन अग्निकुमारके हैं, चैत्यतरुके चव दिशा।
बीस प्रतिमा छबी जिनसी, रूपगुण लक्षण जिसा।

तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक विंशति जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि भवनसु चैत्यतरुके, बिंब आगे जानिए।
शुभ मानथंभ उतुंग बीसो प्रतिमा जुत जानिए।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक-विंशति-मानस्तंभसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वातकुमार सु भवन मांही, चैत्यतरुकी चव दिशा।
जिनबिंब बीस महामनोहर, सकल कू सुखदा इसा।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वातकुमार सु भवन भीतर, चैत्यतरु चव दिश सही।
जिनबिंब आगे मानथंभ सु, प्रतिमा ऊपर कही।
तिन प्रतिमाके पांय पूजो, द्रव्य आठ चढायके।
तिस फलै मेरे कर्म अरि सब, नाशि है भय खायके॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनेषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक मानस्तंभसंबंधिं जिन-बिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्य अश्वत्थ सप्तपरण सु, शालमलि जम्बू सही।
वृक्ष वेत, कदम्ब, प्रियंगु शिरिष पालाशा कही।

इम दशम राजद्रुम सु सोहै, सब तलै प्रतिमा भनो।
जिनबिंब आगे मानथंभसु, प्रतिमा तिन थुति ठनों ॥

ॐ ह्रीं दशप्रकार भवनपतिषु चैत्यवृक्षस्य चतुर्दिक मानस्तंभसंबंधि जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा— दशविध भवनपती धरा, चैत्यवृक्ष सुखदाय।
तिन तल बिंब जिनेशके, मानथंभ जुत थाय ॥१॥

(छंद लक्ष्मीवती–चाल मुनयानन्द)

असुरघर चैत्य अस्वत्थकूं जानिये, सप्तपर्ण चैत्यतरु नागथल मानिये।
शाल्मली वृक्ष सपर्ण सुरके सही, द्वीप थल जंबुतरु चैत्य पुण्यकी मही ॥२॥

उदधि धर चैत्यका वृक्ष होय जी, विदुतकै भवनमें कदम्ब वृक्ष जोयजी।
स्तैन घर प्रियंगु शुभ चैत्यवृक्ष जानिये, दिक्कुमारा भवन सिरीश सो मानिये ॥३॥

वृक्ष पल्लास का नाग घर जोइये, और किरमाल तरु वात तल सोहये।
एक वृक्ष चैत्य थल एक दिश जानिये, पांच जिन बिंबकी पांति शुभ मानिये ॥४॥

चव दिशा वृक्ष तलि चारि पंकति भई, सब मिले बीस बिंब एक वृक्षके सही।
एक एक बिंब आगे सुभग मानिये, मानथंभ एकसे रत्नमय जानिये ॥५॥

बहुत महिमा लिये मानथंभ जानिये, ऊपरै भाग तिस बिंब जिन मानिये।
एक दिश सात बिंब पंकति सोहिए, महा गुण रूपयुत लछि बिन होइये ॥६॥

जानि इत्यादि वृक्ष चैत्य महिमा सही, मानथंभ आदि सब बात श्रुतमें कही।
और रचना सु मन चाहु तिनके हिये, सार त्रैलोक्यते जानि ले सो जिये ॥७॥

दोहा— चैत्यवृक्ष महिमा सकल, मानथंभ जुत जोय।
तिनमें जुत जिनबिंब हैं, लखै मान नहि होय॥

ॐ ह्रीं भवनवासीभवनेषु चैत्यवृक्ष-मानस्तंभसंबंधी जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी देवोंके इंद्रोके भवन संबंधि
जिनचैत्यालयोंकी पूजा

(छन्द जोगीरासा)

असुर कुमार तने जुग इन्द्रसु, तिनको भिन भिन राजो।
भवन तिनोंके तेभी भिन भिन जानि जजों महाराजो।
सब ही असुरनके थल गिनती, चौसठि लाख बताये।
तिनको मन वच तन करि पूजों, अर्घ जोय कर भाये॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारभवने चतुषष्टि लक्षजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नागकुमार विषै दो इन्द्रजु, राजे भिन भिन केरो।
चोरासी लख भवन तिन्होंके, सुख दायक सुर डेरो।
तिनके इक इक थानक मांहि, एक एक जिन गेहा।
मन वच तन तैं बिंब जजों मैं अर्घ लाय हित नेहा॥

ॐ ह्रीं नागकुभारभवने चतुरशीतिलक्षभवनसंबंधि चतुरशीति लक्ष-जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपरण कुमर विषे जुग इन्दर, दोनों ही सम गाए।
लाख बहत्तरि भवन रतनमय, शोभा अधिक बताए।
तिनके इक इक थानक मांहि, एक एक जिन गेहा।
मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा॥

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारभवने द्विसप्ततिलक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप कुमार विषै जुग स्वामी, अद्भुत लक्षण केरे।
लाख छिहंतरि भवन तिन्होंके मनसानक जुत ढेरे।
तिनके इक इक थानक मांहि, एक एक जिन गेहा।
मन वच तन तैं बिंब जजों मैं अर्घ लाय हित नेहा॥

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारभवने षट्सप्तति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधिकुमार सुदेव विषे हैं, इन्द्र जुगल गुणधारी।
लाख छिहतरि भवन विषै शुभ देव बसै सुखकारी।
तिनके इक इक थानक मांहि, एक एक जिन गेहा।
मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमारभवने षट्सप्तति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतकुमार तने जुग इंद्रा, राज तिन्होंका भारी।
लाख छिहतरी भवन विषे हैं जिनसे जिन अधिकारी।
तिनके इक इक थानक मांहि, एक एक जिन गेहा।
मन वच तन तैं बिंब जजों मैं, अर्घ लाय हित नेहा॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारसंबंधि षट्सप्तति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद पद्धरि)

लखि स्तनितकुमार सु देव सोय, तिन भवन छिहतरि लाख जोय।
तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारभवने षट्सप्तति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर दिक्कुमारके इंद्र जोय, ता लाख छिहतरि भवन होय।
तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारभवने षट्सप्तति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर अगनिकुमार सु इंद्र जोय, तिन भवन लाख छिहतर जु होय।
तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमारभवने षट्सप्तति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वातकुमार सु इंद्र सोय, तिन भवन सु छिनवै लाख होय।
तिनमें इक इक जिन थान जान, मैं पूजों तिनको अर्घ आन॥

ॐ ह्रीं वातकुमारभवनसंबंधि षट्नवति लक्ष जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व०।

(हरिगीतिका)

दस जातिके शुभ भवन मंदिर, जजों ध्रुव पद पांय हैं।
तहं बिंब पूजें सदा सुरगण पुण्यको उपजाय हैं।
तिहिं भक्ति कर वसु द्रव्य लेकर, घनी थुति मुखतें करें।
सब चैत्य पूजा ठानि मुखतें, आपने अघको हरें॥

ॐ ह्रीं दश प्रकार भवनवासी विंशति इन्द्रभवनेषु जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व०।

जयमाला

(छंद पद्धरी)

अब भवनपतीके भवन मांहि, जिन थानक मणिमय ध्रुव कहाहिं।
ते भिन्न यहां भाखूं सु जान, लख थान जिना पूजूं सुमान॥१॥

(छंद वेसरी)

दशविधि भवनदेव सुनि भाई, तिन थानकमें जिनथल थाई।
तिनको पूजे शिव सुर होई, भग-दधि बाधा लहै न कोई॥२॥
असुरकुमार देव थल मांही, जिनथल लख चौसठ अधिकाई।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहै न कोई॥३॥
नागकुमार भवनमें जानों, चौरासी लख जिनगृह मानों।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहै न कोई॥४॥
सुपरण देवकुमार सुठाहीं, लाख बहत्तरि जिनथल पाहीं।
तिनको पूजत शिवसुर होई, भवदधि बाधा लहै न कोई॥५॥
दीपकुमार भवनमें थाई, लाख छिहत्तरि जिनथल भाई।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई॥६॥

उदधिकुमार थानके मांही, लाख छिहत्तरि जिन थल थाही।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई ॥७॥

विदुतकुमार भुवनथल भाई, लाख छिहत्तरि जिन थल थाई।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई ॥८॥

स्तनितकुमार देवथल मानो, लाख छिहत्तरि जिनथल जानो।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई ॥६॥

दिक्कुमार देवके मांही, लाख छिहत्तरि जिनगृह थाई।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई ॥१०॥

अग्निकुमार देव पुर थाये, लाख छिहत्तरि जिनगृह गाये।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई ॥११॥

वातकुमार भुवनके थाई, छिनवै लाख भवन जिन पाई।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई ॥१२॥

ऐसे सबही भुवन मझारो, सात कोडि बहतरि लख धारो।
तिनको पूजत शिव सुर होई, भवदधि बाधा लहैं न कोई ॥१३॥

सब ही जिनथल अकृत जानो, कंचन जडित रतनमय मानो।
सो शोभा मुख कही न जावे, पूजेतें अति पुण्य उपावे ॥१४॥

अधोभाग यह जिनगृह जोई, इन पूजाको यह फल होई।
अधोभागमें जनम न पावे, अनुक्रमतैं सो शिवपुर जावे ॥१५॥

ऐसा जानि चरन जिन सेवो, मनवांछित सुख निरभय लेवो।
भव भवमें भक्ति जिन पावे, वह सब अपने कर्म खिपावे ॥१६॥

दोहा— भक्ति देव जिनराजकी, भव भव होय सहाय।
विनय सहित पूजन करौं, यह निशदिन मन भाय ॥१७॥

ॐ ह्रीं भवनवासी देवसंबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अधोलोक तथा मध्यलोकमें व्यन्तरदेव सम्बन्धि अकृत्रिम चैत्यालय पूजा

(छंद गीता)

रत्नपरभा भूमिमें खर भाग अरु पंक भाग है।
मधिलोकमें बहु दीप दधि है लिखित ही उर राग है।
तहां थान व्यन्तर देवके शुभ मांहि जिन थल गाइये।
ते जजन कूं यहां भाव सेती थापि करि थुति लाइये ॥१॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालय! अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम्। ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

(चाल जोगीरासा)

क्षीर समुदको निरमल पानी, कनक झारिमें लाऊं।
हरषधारि कर लेकर अपने, निरमल भाव बनाऊँ।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर, पाय जजों हरषाई ॥२॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन बावन पावनकारी, निरमल नीर मिलाई।
घसिके कनक पियाले धरके, पूजनको उमगाई।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर, पाय जजों हरषाई ॥३॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल धवल अखंडित, नख शिख जुत ले आऊं।
रतन रकेबी धार हरष कर, पूजनको चित लाऊं।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर, पाय जजों हरषाई ।।४।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

देवद्रुमके फूल मनोहर, रंग बिरंगे लाऊं।
गंधी घनी अलिके मन मोहन, मन करि कर-धर ध्याऊं।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर, पाय जजों हरषाई ।।५।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वांछित षट्रस पूर मनोहर, उज्ज्वल विधि कर लाऊं।
ऐसे चरु अपने कर धरिके, मन-वच-तन हरषाऊं।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर पाय जजों हरषाई ।।६।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक मणिमय कनक थाल धरि, तम नाशक कूं लाऊं।
अपने करमें भक्ति भाव तें, नाना गुण मुख गाऊं।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर पाय जजों हरषाई ।।७।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंध बनाय मनोहर, दशधा परमलकारी।
ऐसी धूप सु लेय मनोहर, अगनि विषै परजारी।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर पाय जजों हरषाई।।८।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बिदाम सुपारी, खारक पिसता लाऊं।
इन आदिक फल और मनोहर, अपने कर ले ध्याऊं।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर पाय जजों हरषाई।।९।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पहूप ले, चरु दीपक तमहारी।
धूप फला वसु द्रव्य लेयके, अर्घ लेय सुखकारी।
अधोलोक मध्यलोक विषै है, व्यन्तर थान सु गाई।
तिनमें जिनथल बिंब जिनेश्वर पाय जजों हरषाई।।१०।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद अडिल्ल)

व्यंतर थानक मांहि भवन जिनके सही।
तिनमें बिंब आकार जिनेश्वर-से कही।
तिनके पद शुभ अरघ लाय पूजन करों।
ता फल पूरब पाप सकल दुखदा हरो।।११।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-सम्बन्धि-व्यन्तरदेवस्थानमध्य-जिन-चैत्यालयेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। प्रत्येक अर्घ ।।

(चौपाई)

किन्नर देवनके थल मांहि, है जिनभवन बिंब शुभ ठांहि।
तिनके पद शुभ अर्घ चढाय, पूजन करों सु मन वच काय ।।

ॐ ह्रीं किन्नर-व्यंतरदेव-स्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।१।

है किंपुरुष सुरां व्यन्तरां, जिन थानक जिनके गृह खरा।
तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषव्यंतरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।२।

देव महोरग व्यन्तर स्थान, है जिन गृह उत्तम फल दान।
तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ।।

ॐ ह्रीं महोरग-व्यंतर-देवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।३।

गंधर्व देव व्यन्तरा सही, जिन थानक जिन-थानक ठही।
तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ।।

ॐ ह्रीं गंधर्व-व्यंतर-देवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।४।

यक्ष देव व्यन्तर सुखरूप, जिन थानक जिनके थल भूप।
तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ।।

ॐ ह्रीं यक्ष-व्यंतरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व०।५।

राक्षस देव व्यन्तरा सोय, थानक तिन जिनके गृह जोय।
तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय ।।

ॐ ह्रीं राक्षसव्यंतरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व०।६।

भूतदेव व्यन्तर बहु जान, जिनगृह तिन थानकमें मान।
तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय॥

ॐ ह्रीं भूतव्यंतरदेवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।७।

देव पिशाच व्यन्तरा सोय, जिन थानकमें जिनगृह होय।
तिनमें रतन बिंब सुखदाय, मैं तिन पूजों मन वच काय॥

ॐ ह्रीं पिशाच--व्यंतर-देवस्थानक-सम्बन्धि-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।८।

(अडिल्ल)

आट जातिके व्यन्तर देव सु जानिये।
थान असंख्या इनके मणिमय मानिये।
तिनमें थान जिनेश्वरके इक इक सही।
तिष्ठत हैं जिनबिंब जजों पद थुति-टई॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकार व्यंतरदेवस्थानकसम्बन्धि जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।९।

मानस्तंभका अर्घ

सर्व जिनसद्म चार द्वारनतें शोभनीक।
मणिमई तीन कोटि लसत उतंग है।
द्वारन कर जावे की गली तिन्नमें एक एक।
वीथी प्रति एक एक सोहे मानथंभ है॥

ॐ ह्रीं अधोलोक मध्यलोक संबंधि व्यंतर स्थानक मध्य सर्व अकृत्रिम जिनभवनके चार द्वार संयुक्त तीन कोट वीथी प्रति मानस्तंभ जिनबिंबेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दोहा— व्यंतरथानक जिनभवन, बिना किये ध्रुव थान।
रतनबिंब शोभित सुभग, जजों लेत शुभ ज्ञान ॥१॥

(छंद वेसरी)

अधोलोक पहली भू जानो, रतनप्रभा तिस नाम बखानो।
तामे खर पंक भाग सु भाई, व्यंतरदेव रहै अधिकाई ॥२॥

और देव व्यंतरके थाना, मध्यलोकमें हैं जिन जाना।
बहु बिसतार कनक नग केरा, तुंग कोट तिन पुर चव केरा ॥३॥

तिन सब की गिनती सुन भाई, व्यन्तर नगर असंख्ये गाई।
सबमें इक इक जिनको गेहा, रतनबिंब पूजे सुर नेहा ॥४॥

अपने सुरभवका फल आनै, पूजै देव जिनेश्वर थानै।
करिकै बहु विधि पुण्य उपावे, हरष हरष जिनके गुण गावे ॥५॥

जिन पूजा तें अति सुख होई, करम जनित बाधा नहिं कोई।
अनुक्रम करि सब पाप नशावै, छोडि काय शिवथानक जावे ॥६॥

तहां गेह जिन देवा पूजै, ता फल तिंनके सब अघ धूजै।
हम तो इस थानकमें भाई, भावन भावंत हैं सुखदाई ॥७॥

वहां गमनकी शकती नाहीं, धन्य तिन्हें पूजें तिस टाहीं।
हीन पुण्यको मोसर दूरा, पूजे देव महा पुण्य पूरा ॥८॥

दोहा— व्यन्तर थल जिन भवन जे, जजों द्रव्य वसु लाय।
तिन फल मिस अघ सब कटै, शिवथल पहुंचे जाय ॥९॥

ॐ ह्रीं अधोलोक मध्यलोक-व्यन्तरस्थानकमध्य जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। ॥ इति जयमाला ॥

मध्यलोक संबंधी जिनचैत्यालय पूजा

जंबूद्वीप-पूजा प्रारम्भ

(छंद हरिगीतिका)

द्वीप जंबू विषै जिनथल, कृत्रिम अकृत्रिम है सही।
तिन मांहि जिनके बिंब विलसहि, तिष्ट है पुनकी मही।
ते सकल प्रतिमा भक्ति करी, मैं जजों मन-वच-कायतैं।
वसु द्रव्यतैं तिन पांय पूजो अंग आठ नमायके॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब! अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब! अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरणम्।

(चाल वीरजिनचंद)

निरमल नीर सुहावनोजी, कनकझारी धरि लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय॥ भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, जनम जरा मिट जाय॥
भाई जिन पूजों मन लाय॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चंदन घसु शुभ भावनोजी, निरमल नीर मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय॥ भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, जगत-ताप मिट जाय॥ भाई जिन०॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

अक्षत नख शिख सुध सही जी, उज्जल सुगंध सुलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय ।। भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, अक्षयपद करतार ।। भाई जिन० ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।। ३ ।।

फूल सुगंध सुहावनेजी, अलि गुञ्जत शुभ लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय ।। भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, कामभाव नशि जाय ।। भाई जिन० ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।। ४ ।।

षट् रस जुत नैवेद्य लेजी, मन वच काय लगाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय ।। भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, क्षुधारोग मिट जाय ।। भाई जिन० ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। ५ ।।

रतनमई दीपक कियोजी, कनक थाल धर लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय ।। भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, मोह तिमिर नशि जाय ।। भाई जिन० ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।। ६ ।।

धूप भेलि दशा विधि करीजी, परिमल जुत शुभ लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय ।। भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, अष्ट करम क्षय थाय ।। भाई जिन० ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।। ७ ।।

श्रीफल लौंग बिदाम लेजी, और भले फल लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।। भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, लाभ मोक्ष फल पाय।। भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।। ८।।

जल चन्दनको आदि देजी, वसु द्रव अर्घ मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।। भाई जिन०
जिन पूजे सुख थल मिलेजी, अजर अमर तन थाय।। भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।। ६।।

(छंद जोगीरासा)

जंबू द्वीप सु खेतर मांही, है जेते जिनगेह।।
रतनमई वो बिगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा।।१०।।
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही।
तिन सबको मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो महार्घ्यं।। १०।।

प्रत्येक अर्घ

(पद्धरी छंद)

वन भद्रसाल जिन थान चार। बिन कीने शाश्वत पुन्यकार।।
ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय। संबंध सुदर्शन मेरु पाय।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रसालसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति।।१।।

नंदन वन चव जिन थान जान। सो तीर्थ पापहारी सु मान।। ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुनंदनवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। २।।

चव जिन थल सोहे मनस थान। सब रतनखंड उपमा निधान ॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसौमनसवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

जिनथल चव पांडुक वन मझार। सुर खग पूजैं तहां भक्ति धार ॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपांडुकवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

चव गजदंतो चव जिन सुगेह। महा सुन्दर देखें होय नेह ॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुश्चतुर्गजदंतसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जंबू वृक्षै जिनथान सोय। रचना मणिमंय तहां बिंब जोय ॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुजंबूवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

जिन थान शालमलि वृक्ष टांहि। मुख महिमा कहते पार नाहिं ॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सुदरशनमेरु दक्षिण दिसाय। जिनथान कुलाचल पै जो पाय ॥
तिनमें जिनबिंब मनोज्ञ सोय। जिनके पद पूजों दीन होय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिदक्षिणदिक्कुलाचलजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

उत्तरदिश याही मेर जान। जिनभवन कुलाचल पै सुथान ॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिउत्तरदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

सुदरशनमेरु पूरब दिशाय। जिनथान वक्षारन सीस पाय ॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशासंबंध्यष्टवक्षारगिरस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

पश्छिम दिश येही मेरु सार। वक्षारन पै जिन भवन धार ॥
तिनमें जिनबिंब मनोज्ञ सोय। जिनके पद पूजों दीन होय ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपश्छिमदिशासंबंध्यष्टवक्षारगिरिजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

इस मेरे सुदरशन पूर्व जाय। विजयारध पै जिनभवन पाय ॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशायाः षोडशविजयार्धपर्वतस्थषोडशजिनालयेभ्यो अर्घं ॥ १२ ॥

पश्छिम सुदरशन मेरु ठांहि। वैताडन पै जिनभवन पाहि ॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपश्चिमदिशि विजयार्धपर्वतस्थजिनालयेभ्यो अर्घं ।१३।

इस मेर सुदरशन दछन जानि। रूपाचल पै इक जिन सु थानि ॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुदक्षिणदिशि रूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं ॥ १४ ॥

उत्तर दिश इसही मेर जान। विजयारध पै जिनभवन मान ॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरोरुत्तरदिशि रूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं ॥ १५ ॥

अडिल्ल छंद

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सार जी।
षोडश वनके थान चार गजदंत हैं।
ह्यां इक इक जिनभवन जजा ते संत हैं ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंध्यष्टसप्ततिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

मानस्तंभका अर्घ

सर्व जिनसद्म चार द्वारनते शोभनीक।
मणिमई तीन कोट लसत उतंग है।

द्वारनकर जावेकी गली तिनमें एक एक।
वीथी प्रति एक एक सोहे मानथंभ है ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनभवनके चार द्वार संयुक्त मणिमई तीन कोट वीथी प्रति मानस्तंभ-जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छंद बेसरी)

जंबू द्वीप विषै जिन गेहा, तिनकी माल सुनो करि नेहा।
सुनते ज्ञान होय सुख पावै, पुण्य बधै अद्भुत जस ल्यावै ॥१॥

(छंद पद्धरि)

जिनथान दीप जंबू मझार, लख मेरु सुदर्शन तीर्थ सार।
तिस उ[illegible]ार इनके थान जोय, से पूजों मन वच कर्म धोय ॥२॥

गजदंतों पे जिनगेह जान, बिन किये रतनमय शुभ निधान।
तहां रतनबिंब अति शुभ सोय, ते पूजों मन वच हरष होय ॥३॥

तरु शाल्मली जंबू सुजान, तिनपे जिनमंदिर अचल मान।
तिन मांहि रतनमय बिंब जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥४॥

षट जानि कुलाचल गिरि सु सार, जिनपे जिनमंदिर पाप जार।
तिनपे जिनमंदिर सुभग सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥५॥

भरत ऐरावत बैताड़ जानि, तिनपै जिनमंदिर अचल मानि।
प्रतिमा तिनमें मणिरूप जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥६॥

पूरब विदेह वैताड़ मांहि, जिनमंदिर मणिमय अचल टांहिं।
है अचल बिंब जिन मांहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥७॥

पश्चिम विदेह वैताड़ थाय, जिनगेह तिनोंके शीश टांय।
जिनबिंब तिनोंमें जान सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥८॥

वक्षार शिखरके शीश पांय, पूरब विदेहके मांहि थाय।
तिनमें जिनमंदिर तीर्थ सोय, ते पूजों मन-वच हर्ष होय ॥६॥
पश्चिम विदेह वक्षार जान, तिन शीश गेह जिनके सु मान।
प्रतिमा मणिमय तिन मांहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१०॥
जे नंदी परवत मांहि थाय, जिनगेह और विन किये पाय।
तिनमें प्रतिमा जिन शीश सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥११॥
जे किये थान कैलास मांहि, मंदिर तिनके अति सुभग थाहि।
तहां प्रतिमा विनय स्वरूप सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१२॥
भरत ऐरावत मांहि पाय, भवि करवाये जिनथान थाय।
तहां विनय सहित जिनबिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१३॥
जे होय विदेह सु पूर्व मांहि, जिनभवन भव्य कृति सुभग ठांहि।
तिन मांहि विनयजुत बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१४॥
जो पछिम विदेह मझार जानि, चैत्यालय भविकृत जोग मानि।
जुत विनय तिनोंमें बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१५॥
जे तीर्थस्थान सुकृत निधान, हैं सिद्धक्षेत्र महिमा सुथान।
तहां सुर नर पूजै दीन होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१६॥
जे अतिशय क्षेत्र सु पूज्य थाय, ते विनय सहित जिनबिंब पाय।
पूजैतें सुकृत लाभ होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१७॥
इत्यादिक जम्बू दीप मांहि, जिनथान बिंब जिन विनय ठांहि।
सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्र जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय ॥१८॥

दोहा— क्षेतर जंबूद्वीपके, हो संबंध जिनथान।
तिन पूजै सुख थल मिले, ते पूजों हट टान ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी खंड पूजा

खंड धातकी माहिं भवन जिन हैं सही।
पूजें तिस ढिंग जीव तथा सुर खग कही।
तहं जावनकी शक्ति नहीं मुझ पाइये।
तातें मन वच थापि जजों यहाँ भाइये॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिना! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिना! अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम्।

(छंद हरिगीतिका)

जल लेय प्राशुक महा निर्मल, सुधा सम उत्तम सही।
धरि कनक झारी रतन जड़ित सु, आपने करकी मही।
जे धातकी खंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों जलतें भाव शुध हो, नाश जनम-जरा-करा॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो जलं निर्वपामीति०॥ १॥

घसि अगर चंदन नीर शुभतें, गंध दायक शुभ मई।
धरि कनक प्याले आरती ले, अरघ देकर थुति चई।
जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों चंदन आपने कर, नाश भवतपकी करा॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो चंदनं निर्वपामीति०॥ २॥

अक्षत अखंडित महा उज्ज्वल, गंधजुत मुक्ता समा।
ले आपने कर घालि भाजन, भक्ति जुत शोभापमा।

जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों मन वच काय अक्षत, होय अक्षत पद खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति० ॥ ३ ॥

शुचि फूल सुन्दर कल्पद्रुमके, गन्ध जुत शोभामई।
तिन वरण नानाभांति ऐसे, लेय अपने कर सई।
जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों मन वच काय फूलन, काममद तिन क्षय करा ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो पुष्पम् निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

नैवेद्य खाजा सुभग मोदक, और फीणी जानिये।
इन आदि षट रस पूर व्यंजन, आप करले आनिये।
जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों मन वच काय चरु ले, भूख नाशन को खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो नैवेद्यम् निर्वपामीति० ॥ ५ ॥

रतन दीपक हार तमको, सूर सम परकाशिया।
भरि कनक थाली आप करले, सकल अघ जर नाशिया।
जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों मन वच काय दीपक, मोह तम जारन खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो दीपम् निर्वपामीति० ॥ ६ ॥

धूप दश विधि मेल गंध सु, अगर आदिक सारजी।
ते दहौं अगनी माहिं करतें, हरष बहु मन धारजी।
जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों मन वच काय धूप सु, अष्ट अरि जारन खरा ॥
ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो धूपम् निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

श्रीफल बिदाम सु लोंग खारक, सुभग पुंगी फल सही।
इन आदि बहुफल जातु सुंदर, लाइयो अति सुख मही।

जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों मन वच काय फल ले, मोफफल उपजे खरा॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधी जिनालयस्थजिनेभ्यो फलम् निर्वपामीति०॥ ८॥

जल भलो चन्दन लेय अक्षत, फूल चरु दीपक सही।
फल आदि द्रव्य मिलाय आठों, भरे पातर मधि लही।
जे धातकीखंड होय जिनथल, बिंब जिनके अघहरा।
ते जजों मन वच काय अर्घ सु, सकल वांछित सुखकरा॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति०॥ ९॥

(चौपई)

खंड धातकी दूजो जान, ता थानक जिन मन्दिर मान।
तिन पद अर्घ जजों मन लाय, ता फल होय सकल सुखदाय॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड संबंधि जिनालयस्थजिनेभ्यो महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

प्रत्येक अर्घ

(जिनजंपि की चाल)

विजयमेरुकी भौममें वन भद्रसाल सुखदाई जी।
चार जिनालय मणिमई ते पूजों अर्घ बनाई जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

नंदन वन या ऊपरै तिस महिमा अधिक विचारो जी।
विजयमेरु शुभ स्थान है यह तीरथ निरमल जानो जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः नंदनवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्व०॥ २॥

इस ऊपर वन सोम है तहां देव विद्याधर जावें जी।
चारि जिनालय हैं तहां ते पूजों मैं अघ ढावैं जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः सौमनसवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्व० ॥ ३॥

पांडुक वन सब ऊपरे जहां रतनमई जिनगेहा जी।
चार जिनालय जिन कहे ते पूजों अरघ समेहा जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरुपांडुकवनसंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

विजयमेरु दक्षिण दिशा जंबू वृक्ष बहु विस्तारो जी।
तापै इक जिनगेह है सो पूजों अरघ संवारौं जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिशस्य जंबूवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्व०॥ ५॥

उत्तर दिश इस मेरकी सालमली वृक्ष जानौ जी।
तापै जिनमन्दिर सही ते पूजों अरघ चढ़ानौं जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोत्तरदिशायाः शाल्मलिवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्व०॥ ६॥

विजयमेरु गजदन्त पै जिन थानक हैं पुन्य दाई जी।
सो चारों थल वंदिये ले अरघ महा हरषाई जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोश्चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्व०॥ ७॥

विजयमेरु दक्षिण दिसा गिरि तीन कुलाचल सारो जी।
तिनपै जिन थानक सही ते पूजों हरष अपारो जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः दक्षिणदिशायाः त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्व०॥८॥

उत्तर दिस इस मेरुकी गिर कहे कुलाचल तीनों जी।
तिनपै जिनमंदिर सही ते पूजों भक्ति नवीनों जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंध्युत्तरदिशायास्त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालये निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

दक्षिण दिस वैताढ़ है गिर विजयमेरुतें जानों जी।
तिनपै जिनथल विन किये ते पूजौं हरष चढ़ानो जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिश्येकविजयार्धोपरि जिनचैत्यालयायार्ध निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

विजय महा गिरि मेरुकी विजयारध पश्चम सोला जी।
तिनपै इक इक जिनभवन ते पूजौं अघ होय खोला जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।११।

विजयमेरु की उत्तरै विजयारध एक सुथानौं जी।
तापै इक जिनथान है सो पूजौं कर सन्मानौं जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनचैत्यालयायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १२॥

पूरब दिस इस मेरकी विजयारध महा गिरिंदा जी।
तिनपै षोडश जिनभवन पूजैं मिट है अघफंदा जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषु षौडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १३॥

पूरब दिस इस मेरकी वसु परवत सार वक्षयारो जी।
तिनपै जिनथल आठ हैं ते पूजौं मन वच धारो जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिश्यष्टविक्ष्यारेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १४॥

पच्छम विजय सुमेरुकी आठ वक्ष्यार सुजानौ जी।
आठ तिनौंपै जिनभवन ते पूजौं अरघ सुआनौ जी॥
मन वच भक्ति लगायके।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिष्यष्टवक्ष्यारगिरिष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १५॥

(अडिल्ल छंद)

विजयमेरु संग इस प्रकार वन चारजी।
गजदंता वृक्ष दोय कुलाचल सारजी।
विजयारध चौंतीस वक्ष्यार सुजानिये।
इनपै जे जिनथान जजौं अर्घ आनिये॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १६॥

धातकी खंड पश्चिम दिशा अचल मेरु संबंधी प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

पश्चिम धात खंडके मांहि भरत विषै जिन थानक पांहि।
तिनको अष्ट दरव मिलवाय, पूजत ही नाना गुण पाय॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशायां भरतक्षेत्रसंबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

खंड धातकी पश्चिम दिशि हिमवन सही।
तामें बहुविधि रचना अति ही बन रही।
तिनमें जिन मंदिर अति शोभा मई।
तिन पद अर्घ चढाए उर मद जाय है॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा हिमवान कुलाचल संबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरु दीप ही।
धूप फला वसु द्रव्य अर्घ तिनकी मही।
पश्चिम धातकी खण्ड महा हिमवान है।
ताके जिनथल जजों पुण्यके थान है॥

ॐ ह्रीं धातकीखंड पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल संबंधि जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

पश्चिम दिशा धातकी धरा, निषध कुलाचल जान।
तिसपै जे जिनधाम है, जजों तास थुति ठान॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा निषध कुलाचल संबंधी जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

खंड धातकी पश्चिम मेरु, क्षेत्र कुलाचल आदिक हेर।
जहां जहां जिन थानक होय, ते हों जजों शुद्ध मन होय॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा अचल मेरु संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र विदेह इसी थल मांहि, षोडश गिरि वक्षार सुठांहि।
तिनपै देव जिनेश्वरथान, अर्घ मिलाय जजों जिनस्वाम॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा विदेहक्षेत्रस्थ षोडश वक्षार संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

धातकी खण्ड पश्चिम दिशि मांहि, क्षेत्र विदेह खगाचल ठांहि।
तिनमें बिंब जिनेश्वर सोय, तिन पद अर्घ जजौं मद खोय॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा विदेहक्षेत्रस्थ द्वात्रिंशत विजयार्द्ध-स्थित जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम भोगभूमि थल मांहि, जंबू शाल्मली वृक्ष ठांहि।
तिनमें देव जिनेश्वर थान ते हौं जजों अर्घ जुत ज्ञान॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा जंबूशाल्मली वृक्ष संबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

खंड धातकी पश्चिम दिशा, चव गजदंत मेरुतें लसा।
तिनपै जिनमंदिर सुखदाय, ते हूं पूजों हरष बहु लान॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा चव गजदंत संबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—पश्चिम धातकी नीलगिर, तामें जिनको थान।
ते मैं पूजों भाव धरि मन वच काया जान॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा नील कुलाचल संबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम धातकी खंडमें, रुक्मि गिरि पै जोय।
मंदिर जिनको सो कह्यो, ते पूजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरी गिरि पै सुर खगा, पूजत हैं जिन जाय।
हममें शक्ति न जान की, यों पूजों इस ठाय॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा शिखरी कुलाचल संबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

खंड धातकी पश्चिम दिशा, ऐरावत शुभ धाम।
तहां मंदिर जिनदेवके, ते पूजों इस ठाम॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड पश्चिम दिशा एरावतक्षेत्र संबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

(चोपई)

इस ही थल दक्षिण उत्तरा ईक्ष्वाकार दोय गिरवरा।
तिनमें रतनमई जिनगेह, ते हों नमों ठान बहु नेह॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड स्थित द्वय इक्ष्वाकार संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभका अर्घ

मानस्तंभ अनुपम सुंदर सोहनो।
मान सहित सब होय देख मन मोहनो।
चारों दिशको जान परम सुखदाय जू।
पूजत मन वच काय भविक सुख पाय जू॥

ॐ ह्रीं धातकी द्वीपस्थ सर्व अकृत्रिम जिन चैत्यालयके चार द्वार संयुक्त मणिमई तीन कोट, वीथीप्रति मानस्तंभ जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

खंड धातकीके विषै, हैं जिनमन्दिर सोय।
तिनको मन-वच-काय तें, जजों महासुख होय ॥१॥

(छंद बेसरी)

खंड धातकी दूजो जानो, चार लाख जोजन पर मानो।
वलय व्यास एता मन लावो, मेरु दोय ताके मधि पावो ॥२॥

एक मेरु पूरब दिश मानो, विजय नाम भव्य हित जानो।
इनपे हैं जे जिनवर-गेहा, तिनको नमों ठान बहु नेहा ॥३॥

मेरु दूसरा पश्चिम कानी, अचल नाम ताको सुख दानी।
या पे हैं जिनवरके थाना, तिनकों नमों ठानि उर माना ॥४॥

गोलाकार क्षेत्र है भाई, लवणोदधिके पार जु थाई।
यामें रचना और घनेरी, मेटो देव तास की फेरी ॥५॥

पाप उदय या खेतर पायो, तामें जीव पशू सब थायो।
ताके दुखकी को मुख गावे, सेव देव जिनकी से जावे ॥६॥

फेर मनुष हो बहु दुख लीनो, भोगन की वांछा अति भीनो।
ताके कष्ट कहो को गावे, सेव देव जिनकी से जावे ॥७॥

फिर या खेतरमें विधि योगा, लहै पुण्यतें नाना भोगा।
सो भी छांड़ि और गति पाई, थिर नहिं थिर इक जिन थुति भाई ॥८॥

याही क्षेत्र धातकी माहीं, नर पशु होय सकल विचराई।
ताके दुखकी को मुख गावे, सेव देव जिनकी से जावे ॥६॥

इस उत्तर जिनवरके गेहा, तहां भव्य पूजों करि सेवा।
विजयारध या खंड जिनथाना, सुर खग इहां पूजें तजि माना ॥१०॥

मेरु आदि इस खंड जिनगेहा, तहां सुर जाय जजें कर नेहा।
नाना विधिकी भक्ति उपावै, जय जय जय जिन मुखतै गावै॥११॥

भक्ति प्रभाव दाव शुभ पायो, जिनगुण गावनको उमगायो।
जो जिय प्रभु तुम शरणै आयो, तानें निज भव सफल करायो॥१२॥

हे जिन! या भव संकट माहीं, तुम बिन कोऊ शरणों नाहीं।
जो जिय प्रभु तुम शरणै आयो, तानैं निज भव सफल करायो॥१३॥

ऐसे बहु विधि भक्ति उपावै, ता फल सुर शिव मारग जावे।
तुम प्रभु दीन-तार सुनि आयो, सुमरत ही सब पाप पलायो॥१४॥

मेरी भी यह विनती स्वामी, वह दिन वेग करो जगनामी।
देव जिनेश्वर पद थुति मेरी, भव भवमें थुति पावों तेरी॥१५॥

ॐ ह्रीं धातकी खंड संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्व०।

*

पुष्करार्द्ध द्वीप संबंधि पूजा

(दोहा)

शोभा सारी सुखमई, पुष्करार्द्धकी जान।
तिस खेतर जिनगेह सो, जजों थापि इस थान॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बानि! अत्रावतरावतर संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बानि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बानि! अत्र मम सन्निधौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

निर्मल नीर क्षीरदधि समा, शुभ पात्रमें ले अतिरमा।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

चन्दन शुभ जलतें घिसवाय, कनक पियाले धर मन लाय।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत उज्वल खण्ड न कोय, आछे शुभ जलतें फिर धोय।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

फूल मनोज्ञ रंग अधिकाय, गंध घनी जुत ते सब लाय।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

खाजा घेवर मोदक सार, इन आदिक चरु ले अधिकार।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक रतनमई तम हार, ले आयो कर पात्रै धार।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

धूप करी दशधा शुभ कार, खेवन आयो बहु विधि धार।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

श्रीफल लोंग बदाम अपार, इन आदिक फल ले सुखकार।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल ले शुभ सरु
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

जल फल आदि द्रव्य वसु लाय, अर्घ करूं सुखदायक भाय।
पुष्कर अर्द्ध द्वीपके माहिं, जिनथल जे पूजों मन लाहिं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपसंबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

पुष्करार्द्धद्वीप पूर्वदिशा संबंधी जिनचैत्यालय अर्घ

चौपाई—ऐसे भरत सु पुष्कर मांहि, पूरब दिश जिनथल सो पांहि।
तिनमें बिंब जिनेश्वर तने, जिनपद पूजि सकल अघ हने॥

ॐ ह्रीं पुष्पकार्द्धद्वीप पूर्वदिशायां भरतक्षेत्र संबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।१।

पुष्कर अर्ध पूर्व हिमवान, ताके ऊपर जिनको थान।
तामें बिंब देव जिनराज, सो मैं पूजों सुरशिव-काज॥

ॐ ह्रीं पुष्पकार्द्धद्वीप पूर्वदिशायां हिमवान-कुलाचलसंबंधी जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।२।

इस ही हिमवन कूट सुजान, जिनमंदिर है पुन्य सुखान।
तिनमें बिम्ब जिनेश्वर सोय, ते मैं पूजों मन वच होय॥

ॐ ह्रीं पुष्पकार्द्धद्वीप-पूर्वदिशायां हिमवानपर्वत शीश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।३।

(अडिल्ल छंद)

पुष्करार्द्ध शुभ द्वीप पूर्व दिश जानिए।
निषध नाम तहां पर्वत एक बखानिए।
ऊपर ताके जिनमंदिर शुभसार हैं।
ते हों पूजों भाव सहित सुखकार है॥४॥

ॐ ह्रीं पुष्पकार्द्धद्वीप-पूर्वदिशायां निषधकुलाचल संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई— पुष्करार्द्ध पूरब दिश मांहि, मेरु विदेह क्षेत्रके टांहि।
ताके भद्रशाल वनधाम, हैं जिनगेह जजों शिवकाम॥५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वदिशा मंदिरमेरु भद्रशाल वनसंबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

याही मेरु सोमनस वन सही, है जिनमंदिर चव वन मही ।
तिनमें बिंब कहे जिनराज, ते हौं जजों सुरग-शिवकाज ।।६।।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्वदिशा मंदिरमेरु सौमनसवनसंबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरवदिश सोय, मेरु तहां नंदनवन जोय ।
तामें जिनमंदिर अघहरा, ते हौं जजौं अर्घ ले खरा ।।७।।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्वदिशा मंदिरमेरु नंदनवन संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही मेरु ऊपर सार, पांडुक नामा शुभ वन धार ।
तहां चार जिनमंदिर सही, ते हौं जजों लेन शिवमही ।।८।।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्वदिशा मंदिरमेरु पांडुकवन संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस ही मेरु संबंधी जोय, चव गजदंत-ऊपरै सोय ।
है जिनमंदिर चव अघहरा, ते सब जजौं सुरगशिव करा ।।६।।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्वदिशा मंदिरमेरु चतुर्गजदंत संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस ही मेरु संबंधी दोय जंबूशालमली तरु सोय ।
तिनके थान जिनेश्वर जानि, पूजा करों हरष शुभ ठानि ।।१०।।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्वदिशा जंबूशालमली वृक्ष संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्र्वपामीति स्वाहा।

इस ही मेरु संबंधी जान, गिरिवक्षार शिखर शुभ मान ।
तिनपे जिनमंदिर जे होय, ते सब पूजों अर्घ संजोय ।।११।।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूर्वदिशा मंदिरमेरु संबंधी पोडश वक्षार जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

याही क्षेत्र विदेह मझार, विजयारध पर्वत सो सार।
तिनमें ही जिनमंदिर सोय, ते मैं पूजों अर्घ संजोय ॥१२॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वदिशा मंदिरमेरु संबंधी विदेहस्थ विजयार्ध संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील कुलाचल पुष्कर पूर्व मांहि, कूट शीश जिनमंदिर टांहि।
तेही मन वच काय बनाय, पूजों भली भक्ति मन लाय ॥१३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वदिशा नील कुलाचल संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरबदिश मांहि, रुकमी नाम कुलाचल पांहि।
बिंब तहां जिनवरके सही, ते हौं पूजों पुण्य सुभ ही ॥१४॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वदिशा रुकमिगिरि संबंधी जिनचैत्यालंयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध पूरब दिश मांहि, शिखरी नाम कुलाचल पांहि।
ताके ऊपर है जिनगेह, तिनको पूजों करि बहु नेह ॥१५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वदिशा शिखरी नाम कुलाचल संबंधी जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिंल्ल)

पूरब पुष्कर द्वीपमांहि को जानिए।
एरावत है क्षेत्र महा सुख खानिए।
तामें जे जिनगेह महा तीरथ-मही।
ते हौं मन वच काय जजों शिवदा सही ॥१६॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वदिशा ऐरावतक्षेत्र संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❀

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा संबंधी जिनचैत्यालय

(चौपाई)

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश जान, तामें भरतक्षेत्र शुभ खान।
तिस थानक जिनमंदिर सोय, ते हौं पूजों अर्घ संजोय ॥१॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा भरतक्षेत्र संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

पुष्करार्द्ध शुभ दीप तनी पश्चिम दिशा।
हिमवन नाम कुलाचल पर्वत शुभलसा।
ता ऊपर जिनधाम अकीर्तम मणिमई।
ते हौं पूजों अर्घ ल्याय मन वच सही ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा हिमवान कुलाचल संबंधी जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्द्ध शुभ दीप सुपश्चिम जानिए।
महा हिमवान कुलाचल तहां इक मानिए।
ता ऊपर जिनधाम जजों सो सुखमई।
अरघ लेय कर मांहि भक्ति धर उर सही ॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा महा हिमवान कुलाचल संबंधी जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम पुष्करार्द्ध भू मांहि, निषध नाम पर्वत सो पाहिं।
ताके ऊपर है जिनगेह, तिनको पूजों करि बहु नेह ॥४॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशायां निषध कुलाचल संबंधी जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्।

पश्चिम पुष्कर अर्ध माहिको जानिए।
क्षेत्र विदेह सुथान महा सुख मानिए।
तामें जिनके थान तीर्थ सब अघहरा।
तेहूं पूजों अर्घलेय मन वच धरा ।।५।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा विदेहक्षेत्र संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

याही क्षेत्र विदेह मझार, षोडश गिरि वक्षार सुसार।
ऊपरि तितने ही जिनगेह, ते सब जजों मान बहु नेह ।।६।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा विदेहक्षेत्र संबंधी षोडश वक्षारगिरि ऊपरी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम अर्ध पुष्करके मांहि, क्षेत्रविदेह खगाचल माहिं।
तिन सब पै जिनमंदिर थान, ते हौं जजों अर्घ कर आन ।।७।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा विदेहक्षेत्रसंबंधि द्वात्रिंशत विजयार्द्ध स्थित द्वात्रिंशत जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, जम्बू शाल्मली तरु सार।
तिन ऊपरि जिनवरके थान, ते हौं जजों अर्घ शुभ आन ।।८।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा जम्बूशाल्मलीवृक्षयो जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस ही क्षेत्र विदेह मझार, मेरु नाम गिरिमधि थल सार।
ता ऊपरि जिनवरथल सोय, ते सिध जजों हर्ष युत होय ।।६।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध विद्युन्माली मेरुसंबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

पश्चिम दिश की अर्ध द्वीप पुष्कर मही।
नील कुलाचल नाम तास ऊपरि सही।
है जिनवर को गेह अकिरतम सारजी।
ते हौं पूजों अर्घ थकी थुति धारजी।।१०।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा नीलकुलाचल जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कर पश्चिम अर्ध भागमें जानिए।
रुक्मी नाम कुलाचल सुखदा मानिए।
ता ऊपर जिनगेह अकृत्रिम मणिमई।
सो हम पूजैं सुखदायक पुनिकी सही।।११।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा रुक्मि नाम कुलाचल संबंधी जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पश्चिम पुष्करार्द्धके मांहि, शिखरी नाम कुलाचल पांहि।
ता ऊपर जिनवरके धाम, सो मैं जजों स्वर्ग शिव काम।।१२।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशायां शिखरी नाम कुलाचल संबंधी जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपके जानिए।
ऐरावत शुभक्षेत्र महा सुख दानिए।
तामें जिनके थान तीर्थ उज्वल सही।
ते सब अर्घ बनाय जजों पुर की मही।।१३।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशा ऐरावतक्षेत्र संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

इस ही थल दक्षिण उत्तरा, ईक्ष्वाकार दोय गिरवरा।
तिनमें रतनमई जिनगेह, ते हौं नमों ठान बहु नेह ॥१४॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध संबंधी द्वय ईक्ष्वाकारसंबंधी जिनचैत्यालयस्थजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

पुष्करार्द्ध मझार दिशा पश्चिम सही।
हैं जिनगेह सुथान तीर्थ शुभ की मही।
ते सब सुर खग जजैं हम बल हीन हैं।
तातैं इस ही थान जजों हो दीन हैं ॥१५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमदिशायां जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभका अर्घ

सर्व जिन सद्म चार द्वारनतें शोभनीक।
मणिमई तीन कोट लसत उतंग है।
द्वारन कर जावेकी गली तिनमें एक एक।
वीथी प्रति एक एक सोहे मानथंभ है।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपके सर्व अकृत्रिम जिनभवनके चार द्वार संयुक्त मणिमई तीन कोट वीथी प्रति मानस्तंभ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

पुष्कर आधे दीपमें, जे जिनमंदिर होय।
ते सब मन वच कायतैं, जजों अर्घ ले जोय ॥१॥

(बेसरी छंद)

अर्ध पुष्कर जो द्वीप अनूपा, सुन्दर अधिक सकलमें भूपा।
तहां गेह जिनके सुखदाई, पूजैं देव खगासुर आई ॥२॥
अपना जन्म सफल कर आवैं, देव जिनेश तनी थुति गावैं।
करै नृत्य सुर खग नर भारी, हरै पाप पुण्य ले अधिकारी ॥३॥
हममें शक्ति जान की नाहीं, तातैं इह थानक थुति गाहीं।
अष्ट द्रव्य सुन्दर ले आए, इहातें जिनपद अर्घ चढाए ॥४॥
फिर विनती हम इस विधि ठानैं, पुनि पुनि भक्ति करैं मुख गावैं।
अहो देव देवपति देवा, भव भव देय आपनी सेवा ॥५॥
विन तुम सेव देव जिनराई, मैं चवगति नाच्यो अधिकाई।
तिन दुखकी मुखतैं क्या कहिए, तुम सर्वज्ञ सकल लख लहिए ॥६॥
भो जिन अब तो शरण तिहारो, तुम मेटो भववन संसारो।
तुम बिन और शरण नहिं कोई, करो योग्यसो तुम अब होई ॥७॥

(दोहा)

ऐसे बिनती ठानि कै, पूजा करिय जिनेश।
ताको फल यह ऊपजै, मिटै चार गति भेश ॥८॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपसंबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् ॥ इति ॥

मानुषोत्तरपर्वत संबंधि जिनचैत्यालय पूजा

(दोहा)

मानुषोत्र-पर्वत विषै, चव दिश चव जिनधाम।
ते हों जजों सुथापि इहां, भक्ति धार शिवकाम॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

निर्मल नीर क्षीरदधि समा, सुभग पात्र ल्यायो चित-रमा।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चन्दन बावन गन्ध अपार, जलतैं घसि ल्यायो कर सार।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

अक्षत उज्वल अखंड सुगन्ध, धोय लायो सुगन्ध करि खंड।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

कल्पवृक्षसे फूल सुभाय, गंध घनी नाना रंग लाय।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

खाजा फीणी घेवर ल्याय, मोदक आदि सुभग चरु भाय।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक रतन मई तमहार, कनकथार लायो भर सार।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

धूप सुगन्ध मेल दश सही, लायो जिनपद खेवन मही।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बदाम अपार, पूंगीफल आदिक फलसार।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प सोय, इन आदिक वसु द्रव्य संजोय।
मानुषोत्र चव दिश जिनधाम, पूजों स्वर्ग मुक्ति फल काम ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

(छंद अडिल्ल)

मानुषोत्तर चव दिश जिनवरके धामजी।
सुर खग ही तहं जाय नहीं अन कामजी।
शक्तिहीन हम तनी जान शक्ति नहीं।
तातैं यहां ही भावन करिके पूजों सही॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत संबंधी चतुर्दिश चतुर्जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

मानुषोत्र पर्वत पै जान, पूरव दिश जिनमंदिर आन।
तहां बिम्ब जिनवरके सोय, तिन पद अर्घ जजों मद खोय॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वत पूर्वदिशायां जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

दक्षिण दिश इस गिरिके जेय, जिनमंदिर शोभै अति तेय।
बिम्ब तहां जिनके आकार, ते हों जजों अर्घ कर धार॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत दक्षिणदिशायां जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

मानुषोत्र पर्वत इस ठौर, है जिनभवन सुतीरथ जोर।
पश्चिम दिश सुर खग पुजवाय, सो मैं पूजों अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत पश्चिमदिशायां जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

मानुषोत्रकी उत्तर दिशा, है जिनमंदिर शोभै लसा।
पूजै देव भक्ति मन लाय, सो मैं पूजों अर्घ चढाय॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत उत्तरदिशायां जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

मानुषोत्र पर्वत चव कूट, तिन पर है चव जिन गृह छूट।
तिनको अर्घ यहां ही लाय, पूजों भक्ति भाव अधिकाय॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वतस्य चतुर्दिशा संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

मानस्तंभका अर्घ

जल चंदन इत्यादि सु अर्घ संजोयके।
जिन पूजत भविवृंद सु हरखित होयके।
चारों दिश मानस्तंभ जिनेश्वर पूजिए।
नाचत गाय बजाय सु हरखित हुजिए॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्र-पर्वत संबंधी अकृत्रिम जिनचैत्यालयके चार द्वार संयुक्त मणिमई तीन कोट, वीथीप्रति मानस्तंभ-जिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा— मानुषोत्र पर्वत विषै, कहे जिनेश्वर थान।
तिनको अर्घ जजों सही, मन वच तन सुध आन॥१॥

(वेसरी छंद)

पुष्करार्द्ध द्वीपके मांहि, वलयाकार गिरी तिस ठांहि।
ऊंचो सतरे सौ इक ईशा, योजन इतने दीरघ दीशा॥२॥

भूमें व्यास तना परमाना, एक सहस्र बाईश सुजाना।
यह तो योजन नीचे चौरा, ऊपरि व्यास सतक चव जोरा॥३॥

फिर चौवीस अधिक मिलवाओ, इतना ऊपर चौडा पाओ।
तिन पै एक वेदिका जानो, चार हजार धनुष तुंग मानो॥४॥

धनुष सवासौ चौड़ी होई, वलयाकार गिरी सम जोई।
तिनके ऊपर कोटि बाईसा, चव ऊतर तै जिनगृह दीसा॥५॥

बाकी अष्टादश जे कूट, तिन पै देव रहै अघ छूट।
षट् कूटन पै देवी दासा, ऐसे जिनवाणीमें भासा ।।६।।
सवा तीस योजन सुनि भाई, चार सैकड़ा और बताई।
इतना मानुषोत्तर भू मांही, नेम जेम जानो मन टांहि ।।७।।
चय दिश त्रय त्रय कूट बताये, दो दो विदिशामें त्रय गाये।
एक चक भीतर चवकानी, एक एक गृह तहं जानी ।।८।।
तिनकों सुर खग पूजें जाई, अर्घ करै वसु द्रव्य मिलाई।
हम तो जान शक्ति नहि पाई, तातें इहांतें अर्घ चढाई ।।९।।

दोहा— मानुषोत्तर चव दिश विषै, हैं जिनके चव धाम।
तिन थल पूजै थल लहैं, टेक मुक्ति फल मान ।।१०।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर-पर्वत संबंधी जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर द्वीप संबंधि जिनचैत्यालय पूजा

(दोहा)

नंदीश्वर चव दिश सही, बावन जिनके धाम।
जहां जान शक्ति नहीं, जजों थापि इस ठाम ।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् द्विपंचाशत जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा-समूह! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् द्विपंचाशत जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् द्विपंचाशत जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

निर्मल जल शुभकारी लेय, मन वच तन बहु हर्ष धरेय।
नंदीश्वर चव दिश जिनधाम, पूजों द्रव्य थकी शिवकाम॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चन्दन बावन घसि शुभ सार, निर्मल भाव सहित करधार।
नंदीश्वर चव दिश जिनधाम, पूजों द्रव्य थकी शिवकाम॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

अक्षत उज्ज्वल धोय अपार, ले आयो अपने करधार।
नंदीश्वर चव दिश जिनधाम, पूजों द्रव्य थकी शिवकाम॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

सुर तरुके से फूल सुगन्ध, नाना वरण कामके कन्द।
पूजों नंदीश्वर जिनगेह, बावन तीरथ अघहर जेह॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, मोदक आदि अनेक सुभाय।
पूजों नंदीश्वर जिनगेह, बावन तीरथ अघहर जेह॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं०॥ ५॥

दीपक रतन समान विहार, ले आयो शुभ पातर धार।
पूजों नंदीश्वर जिनगेह, बावन तीरथ अघहर जेह॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं०॥ ६॥

दशधा धूप सुगन्धित सोय, ले आयो खेवन मन होय।
पूजों नंदीश्वर जिनगेह, बावन तीरथ अघहर जेह॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं०॥७॥

श्रीफल लोंग बदाम अनूप, पूंगीफल ले आदिक तूप।
पूजों नंदीश्वर जिनगेह, बावन तीरथ अघहर जेह॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

(छंद—अडिल्ल)

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु लाइये।
दीप धूप फल मिलाय अर्घ करवाइये।
नंदीश्वर चव दिशा गेह भगवानके।
ते सब इहां तैं पूजों कर सुर गानके॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक् संबंधि द्विपंचाशत् जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

नंदीश्वरके चार दिशा संबंधी अर्घ

(अडिल्ल)

अंजनगिरि इक दधिगिरि चार बखानिए।
रतिकर आठ सु पूरव दिशको मानिये।
इनपै इक इक गेह देव जिनके सही।
पूजें सुर तो जाय जजैं हम इस मही॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर पूर्वदिशा संबंधि एक अंजनगिरि चतुर्दधिमुखगिरि अष्ट रतिकर गिरि स्थित त्रयोदश जिनालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्।

नंदीश्वरकी दक्षिण दिशको जानिए।
अंजनगिरि इक चव दधिमुखगिरि मानिए।

रति-गिर आठ सदीव सकल दशत्रय गिरा।
इनपे इक इक थान जिनेश जजों खरा॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्।

नंदीश्वरकी पश्चिम दिशको जानिए।
तेरह पर्वत मणिमय सुखदा मानिए।
तिनमें इक इक गेह देव जिनके सही।
पूजैं सुर तहां जाय जजैं हम इस मही॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशायां त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरकी उत्तर दिशको जानिए।
त्रयोदश जिनके थान महापुन्य खानिए।
सुर तो परतछ जाय जजैं जिनपद तहां।
हम तो भावन भाय अरघ जजहैं इहां॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशायां त्रयोदश जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घम्।

मानस्तंभका अर्घ

आठ दर्व ले अर्घ संजोयो पूजों श्रीजिन भाई।
भवसागरतें पार उतारो जै जै जै जिनराई।
मानस्तंभ सोहनो सुंदर चारों दिश सुहावे।
पूजत हरष होत भवि जीवन सुर-शिवलक्ष्मी पावे॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपके सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयके चारों दिशके मानस्तंभ-पूजनार्थे अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा— नंदीसुर शुभ द्वीपमें, जिनचैत्यालय सोय।
बावन चव दिशके सही, ते पूजों मद खोय॥१॥

(चाल : मुनियानन्द)

द्वीप नंदीश्वरा अष्टमा जानिये, तीर्थ जिनभवन महा पापहर मानिये।
मनुष्यका गमन नहिं तास थल मानिये, देव हरि लेयके शब्द सुख आनिये ॥
शची जुत आ हरि भक्ति जिनकी करै, पाप कर्म जारि शिवथान मनसा धरै।
स्वर्ग सोलह तने हरी सर्व आयजी, ज्योतिषा व्यंतरा असुर यश गायजी ॥
इंद्र सौधर्म ईशान द्वय जानिये और असुरादिके इंद्र द्वय मानिये।
च्यारिदिशि चार हरि पूज जिनकी करें, पहर दो दो तनी भक्ति करि अघ हरै ॥
फिर वह इंद्र और दिशाको जाय है, या तरह द्वीप प्रक्रम्य निति दाय है।
आपना आपना लेय फिरै परवारजी, पूजते सभी देव हरषायजी ॥
सभी निज मुख थकी शब्द जय जय करैं, गान नृत्य भक्ति कर आपने अघ हरैं।
आठ दिन रैन दिन पुन्य उपजाय है, आपनो सुर तनों सफल पद लाय है ॥
वरष इक मांहि बेर तीन सुर आय हैं, द्वीप नंदीश्वरै पूजि जिन लाय हैं।
मास फाल्गुन सु आषाढ कार्तिक विषै, ठानि शुभ जात ये भक्ति मुखतैं अखै ॥
चार अंजनगिरि द्वीपमें है सही, दधिगिरी वाणीमें षोडशा सुखमही।
तीस दो रतिकरा सर्व बावन कहे, शीश सबके भवन जिन तने हैं रहे ॥
किये बिना सकल विधि काल चिरकी सही, मणिमई बिंब जिनराज सुकृत मही।
धन्य जो जीव यह थान पूजा करै, तास फल फिर नहीं जनम मरणा करै ॥

(दोहा)

शक्ति नहीं इम जानकी, भक्ति प्रेरे आय।
तातैं मन वच "टैक" शुभ, पूजत मन वच काय ॥१०॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीप संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंडलगिरि संबंधी जिनचैत्यालय पूजा

(छंद अडिल्ल)

कुंडल दीप मंझार एक गिरि जानिये।
कुंडलकी उपमान वलयाकृत मानिये।
ताके चव दिश चव जिनवरके धाम हैं।
ते हों यहाँ मैं जजों सुरग-शिवकाम है।।

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनाः! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनाः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनाः! अत्र मम सन्निहिता भव भव व ट् सन्निधिकरणम्।

(चोपाई)

निरमल उदक महा सुखकार, कनक झारिकामें धरि सार।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजौं धरि बहु नेह।।

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।। १।।

चंदन गंध मलयागिर जान, सो घसि नीर थकी हम आन।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह।।

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।। २।।

अक्षत उज्ज्वल बीन मंगाय, धोय महा शुध कर हम लाय।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह।।

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।। ३।।

सुरतरुके से फूल सु सार, गंध सहित लाये अधिकार।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नाना रस नैवेद्य बनाय, मोदक आदि सु सुभग ले आय।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक रतन महा तम हार, सो ले आयो कर धर सार।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दशधा धूप बनाकर लाय, खेवन को आयो उमगाय।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल लोंग बिदाम अपार, खारक आदि लेय फल सार।
कुंडलगिरि चव दिश जिनगेह, ते हों पूजों बहु धरि नेह ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन अक्षत कुसुमान, चरु वर दीप धूप फल आन।
मेल अरघ कर लायो सही, पूजों कुंडलगिरि शुभ मही ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि चतुर्दिक संबंधि जिनचैत्यालयस्थ-जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

' प्रत्येक अर्घ

चौपाई— कुंडलगिरि पूरव दिशि जान, है जिनमंदिर तीरथ मान।
देव जाय पूजें उस मही, हम ईहां जजैं अरघ ले सही ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि पूर्वदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कुंडलगिरि दक्षिण दिश जेय,है जिंनभवन पूज्य जग तेय।
सुर-खग तो पूजैं तहां जाय, हम पूजैं इह भावन भाय ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि दक्षिणदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

कुंडलगिरि पश्चिम दिश जेय, है जिनभवन पूज्य जग तेय।
पूजे देव पुण्य उपजाय, इहां हम अर्ध जजें थुति लाय ॥

ॐ ह्री कुंडलगिरि पश्चिमदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

उत्तर दिशा कुंडलगिरि जान, ऊपर जिनमंदिर सुखखान।
पुण्य बिना जावो नहिं बने, तातैं यहां तैं पूजा ठने ॥

ॐ ह्रीं कुंडलगिरि उत्तरदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

मानस्तंभका अर्घ

जल आदिक आठ हु द्रव्य लिया।
इकठी भरि थार हि अर्घ किया।
चतुर दिश मानस्तंभ कहा।
हरि पूजि जिनेश्वर हर्ष लहा ॥

ॐ कुंडलगिरि संबंधि सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयके चारों दिशाके मानस्तंभस्थ-जिनेभ्यो अर्घं निर्वापामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

कुण्डलगिरि चारों दिशा, श्री जिन भवन विशाल।
जिनपद शीश नवायकैं, अब वरनूं जयमाल ॥

(पद्धरि)

जै एक खरव वसु अरब जान, जै कोड पचासी अधिक मान।
जोजन सु छिहत्तर लाख सार, इक इक दिशको आयाम धार ॥
जै कुण्डलद्वीप दिपै रिशाल, तिस बीच सु कुण्डलगिरि विशाल।
चहुं ओर द्वीप आधो सुघेर, कुण्डलवत गोल परो सुहेर ॥
जोजन पचहतर सहस अंग, उन्नत कंचनके वरन रंग।
जै गिर ऊपर चहुं दिश सु चार, जै सिद्धकूट जिनभवन सार ॥
जै रतनमई प्रतिमा जिनेश, शत आठ अधिक वंदत सुरेश।
सब समोसरण रचना निहार, वरनत सुरगुरु पावैं न पार ॥
जै चतुर निकाय जु देव आय, जै जिन गुन गावै प्रीत लाय।
जै दुंदुभि शब्द बजें सु जोर, अनहद सारे बारह किरोर ॥
जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजें मृदंग, निरजर निरजरनी नचैं संग।
ता थेई थेई थेई धून रही पूर, जगतारन जिनवरके हजूर ॥
जिन चरनकमल पूजत सुरेन्द्र, सब देव करत जय जय जिनेंद्र।
मन वच काय भुवि शीश लाय सेवक सदा बल बल सुजाय ॥

दोहा— कुण्डलगिरि जिनभवनकी, पूजा बनी महान।
जो वांचे मन लायके, पावै अविचल थान ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि चवदिश संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तेरहवाँ द्वीप रुचिकगिरि संबंधि
जिनचैत्यालय पूजा

(दोहा)

रुचिक नाम पर्वत सही, द्वीप तेरहवें मांहि।
तापे चवदिश जिनभवन, ते पूजों श्रुति लांहि॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनाः! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनाः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनाः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल मुनियानन्द)

नीर शुभतर मंगा सुभग पातर लयो।
भक्ति जुत आप मैं भाव भावत भयो।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

बावनो गंध जुत अगर तगरै कही।
नीरतें रगड कर लाइयो पुनि महीं।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत अति उज्वला खंडबिन शुभकरा।
धोय शुद्ध नीर ले आपने कर धरा।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

फूल शुभ वरनके गंध नाना कहे।
गूंथि तिन माल कर आपने कर लये।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

सुभग नैवेद्य ले मोदका आदिजी।
खाजला सेवरी फेनका सादजी।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

मणिमयी दीपका हार तमके सही।
थालभर लाइयो भक्तिधर उर मही।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं निर्व०॥ ६॥

धूप दश गंध मिलि पीसकर लाइयो।
खेय हूँ अग्नि मध्य भक्ति उपजाइयो।

रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफला लोंग खारक महा सुख मही।
आदि इन और फल ल्याइयो हम सही।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जजों मन वचन काय सुखकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

नीर चंदन अक्षत पुष्प चरु दीपजी।
धूप फल अर्घ ले आइयो समीपजी।
रुचिकगिरि चवदिशा थान जिनके सही।
सो जज़ों मन वचन काय सुखकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

अर्घ शुभ मेलि द्रव्य आटकी जानिये।
नीर फल गंध आदि शुद्ध ले मानिये।
रुचिकगिरि पूर्वदिश थान जिनको सही।
ते जजों भक्ति कर जान पुनिकी मही ॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पूर्वदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

नीर गंध अक्षता पुष्प चरु दीपजी।
धूप फल आदि मिलवाय ले सर्वजी।

रुचिकगिरि दक्षिणदिशा थान जिनको सही।
ते जजों भक्ति कर जान पुनिकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि दक्षिणदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं॥ २॥

नीरगंध आदि दे द्रव्य वसु आनिये।
इन तीन मेलके अर्घ शुभ ठानिये।
रुचिकगिरि पश्चिमदिशा थान जिनको सही।
ते जजों भक्ति कर जानि पुनिकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि पश्चिमदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं॥ ३॥

आठ ही द्रव्य वस्तु छांटकर लाइयो।
अरघ कर भक्तितें हरष गुण गाइयो।
रुचिक उत्तरदिशा थान जिनको सही।
ते जजों भक्ति कर जानि पुनिकी मही॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि उत्तरदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

(वेसरी छंद)

रुचिक नाम पर्वत सुखदाई, ताकी चवदिश जिनथल पाई।
देव जजों प्रत्यक्ष जे थाना, हमको यहां ते अर्घ चढाना॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि चवदिशा संबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

मानस्तंभका अर्घ

आठों दरव सु आन अर्घ चढाय सु जग तरो।
मानस्तंभ महान चर्तुदिश पूजा करौं॥

ॐ ह्रीं रुचिकगिरि द्वीपके सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयके चारों दिशके मानस्तंभ पूजनार्थे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

रुचिक द्वीपके बीचमें, पर्वत रुचिक विशाल।
जिनमन्दिर चारो दिशा, तिनकी सुन जयमाल॥

जै जोजन सत्रह खरब गाय जै अरब सु इकतालिस मिलाय।
जै सत्तर दोय कहे किरोर, जै षोडष सहस सु अधिक जोर॥

यह रुचिक द्वीप आयाम जान, इक इकके भाषे हैं पुरान।
तिस बीच रुचिकगिरि परो फेर, चारों दिश आधो दीप घेर॥

चवरासी सहस कहे उतंग, जोजन कंचनके वरन रंग।
दिश आठ कूट चालिस सु चार, तहां रहे देव छप्पनकुमार॥

जिन गर्भजन्मको समय पाय, जिन माताको सेवै सु आय।
अर कूट चार गिरके सु अन्त, तहां देव चार सु वसो वसंत॥

जै चारों दिशमें कूट चार, है सिद्धकूट तसु नाम सार।
ता पर जिनमंदिर शोभमान, सब समोसरण रचना समान॥

तहां श्री जिनबिंब बिराजमान शत आठ अधिक प्रतिमा प्रमान।
जै रत्नमई द्युति अति विशाल, सुर इन्द्र चरन पूजत त्रिकाल॥

जै नृत्य करत संगीत सार, बाजे बाजत अनहद अपार।
जै जिनगुन गावैं अमर नार, सुर ताल मधुर ध्वनिको संवार॥

जै जै जगतारन जै जिनेश, तुम चरण कमल सेवत सुरेश।
हम करत वीनती नमत भाल, भव भव तुम सेव करैं सुलाल॥

धत्ता दोहा

रुचिक द्वीप जिनभवनकी, पूरन यह जयमाल।
जो नर वांचै भावधर, तिनके भाग विशाल॥

॥ इति जयमाला ॥

मध्यलोकके अन्तमें ज्योतिर्लोककी
असंख्यात जिनचैत्यालय पूजा

(दोहा)

ज्योतिष लोक विमानमें, असंख्यात जिनधाम।
ते पूजों शुभ भाव धरि, थाप इहां शिवकाम॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्योतिषी-विमानस्थित असंख्यात जिनचैत्यालयस्थ जिन-बिंबा अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्योतिषी-विमानस्थित असंख्यात जिनचैत्यालयस्थ जिन-बिंबा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्योतिषी-विमानस्थित असंख्यात जिनचैत्यालयस्थ जिन-बिंबा अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई)

त्रसविन निरमल नीर सुजान, सौ मैं धर पातरमें आन।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोक असंख्यात विमानसम्बन्धि जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलय सुगंध नीर घसवाय, कनक रकेबीमें धरि लाय।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोक असंख्यात विमानसम्बन्धि जिनेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

अक्षत उज्ज्वल गंध अपार, खंड रहित ल्यायो हितधार।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोक असंख्यात विमानसम्बन्धि जिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

पुष्प सुगंध वरन सुखदाय, मानों कल्पद्रुमके लाय।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोक असंख्यात विमानसम्बन्धि जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

खाजा फेनी घेवर सार, इन आदिक बहु ले हितकार।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषर्लोक असंख्यात विमानसम्बन्धि जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

दीपक रतनमई तमहार, सो हूँ ल्याय भरि करि थार।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिर्लोक असंख्यात विमानसम्बन्धि जिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

बावन चंदन आदि सुगन्ध, दशधा ले आयो विनफंद।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

श्रीफल लोंग बदाम मिलाय, इन आदिक बहु फल शुभ लाय।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

जल चंदन अक्षत पुष्प सार, चरु दीपक फल धूप अपार।
ज्योतिषलोक असंख्य जिनगेह, ते हों पूजों धर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

पंच प्रकार ज्योतिषी देव, तिनके थान बने बिन खेव।
तिन सबमें इक इक जिनगेह, ते हों पूजों धरि बहु नेह ॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकार ज्योतिषदेव विमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १० ॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

असंख्यात ज्योतिष विमानके प्रत्येक चंद्र परिवारके अर्घ

(चौपई)

सूर्यविमान विषें जिनगेह, ते हों जजों ठानि बहु नेह।
ता फल मोक्ष स्वर्ग पद पाय, और कहा भाखूँ अधिकाय ॥

ॐ ह्री सूर्यविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंद्र विमान महा शुभ धरा, तामधि जिनका मंदिर खरा।
ते हों पूजों अर्घ चढ़ाय, ता फल स्वर्ग मोक्ष पद पाय ॥

ॐ ह्रीं चंद्रविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

(पद्धरि छंद)

यह ग्रह अट्ठासी जोय सार, इनके विमान मणिमई सुधार।
तिनमें मणिमय जिनगेह सोय, मैं पूजों मनवच शुद्ध होय ॥

ॐ ह्रीं अष्टाशीतिः ग्रह विमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ये वीस रु आट नक्षत्र जान, भिन्न भिन्न इकके सुविमान मान।
तहं मंदिर श्री जिनराज सोय, ते पूजों मन वच हरष होय ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति नक्षत्र संबंधी विमानस्थित जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छयासठ सहस्त्र नौ सो पछत्तर, कोडा कोडी तारा विमान।
तहं मंदिर श्री जिनराज सोय, ते पूजों मन वच हरष होय॥

ॐ ह्रीं तारा ज्योतिषी विमान संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि सूरज तारा ग्रह जान और नक्षत्र पांच मन आन।
तिनमें प्रतिमा जिन आकार जिनपद अर्घ जजों थुति धार॥

ॐ ह्रीं पंच प्रकार ज्योतिषीदेव संबंधी असंख्यात जिनचैत्यालयस्थ जिन-बिंबेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

पंच जाति ज्योतिष सुरा, बिना संख्या इन थान।
तिनमें जे जिन गेह हैं, जजो छांडि निज मान॥

(बेसरी छंद)

चन्द्र सूर्य ग्रह जानो भाई नाम नक्षत्र और समझाई।
तारा मिले पांच परकारा, ज्योतिष देव इनोंमें सारा॥

पृथ्वीतें ऊंचे परमानो सात सैकडा निबै मानों।
ये तो तारनको परमाना, और सुनों आगे व्याख्याना॥

तारनतैं दश योजन भाई, ऊँचा सूर्यविमान बताई।
रवितैं अस्सी योजन जानों, ऊरधचन्द्र विमान बतानो॥

चव योजन शशि मैं सुखदाई, है नक्षत्रकी जान ऊँचाई।
लग नक्षत्र चव योजन जानों, ऊँचो बुद्ध विमान प्रमानो॥

बुधतैं योजन तीन बताया, शुक्र विमान ऊँचा समझाया।
योजन तीन शुक्रतैं भाई, ऊँचा बृहस्पति तीन कहाई॥

बृहस्पतिसे त्रय योजन जानों, मंगल ऊँचा है श्रुत ज्ञानो।
मंगलसे त्रय योजन जोई, ऊँचा जान शनीश्चर सोई॥
तिनमें राहु सु केतुक जाना, योजन एक घाट कछु माना।
रवि शशि से ये नीचे जानों, एसो गमन होय मन आनो॥
राहु चन्द्रकी ज्योति अछादे, केतु सूर्यदुतिकर है मादै।
ताकों लोक ग्रहण कहि भाई, ये ज्योतिष की गमन बताई॥
राहु विमान ध्वजा दंड सोई, ता ऊपर चतु अंगुल होई।
चन्द्र विमान तना परमाना, इतना केतु थकी रवि जाना॥
सूरज कांति उष्णता मानों, चन्द्रकिरण शीतल मन आनों।
शुक्र-किरण उज्वल परकाशा, और ज्योतिषी मंदगति भासा॥
तास साठ इकईश जु जानों, अन्तर योजन मेरु सु मानो।
ज्योतिष पटल गमन करवावै, इतने योजन जान न पावै॥
जंबूद्वीप मांहि रवि दोई, चन्द्र दोय मानों सुख होई।
लवणसमुद्र गिनो शशि चारा, सूरज भी चव जानो प्यारा॥
खण्ड धातकीमें रवि बारा, द्वादश ही शशि जानो प्यारा।
कालोदधि सूरज शशि जानो, चाली दो चाली दो मानों॥
पुष्कर-अर्ध सूर्य शशि सोई, सत्तरि दोय भिन्न कर सोई।
द्वीप अढाई बारै जानों, सब हि ज्योतिषी ध्रुवै मानों॥
एक चन्द्रका सुन परवारा सूरज जान एकतिस लारा।
ग्रह अट्ठासी और बताये, जान नक्षत्र अट्ठाइस गाए॥
सबसे मन्द गमन शशि केरा, शशिसे रविका शीघ्र जु फेरा।
रविसे शीघ्र जु ग्रहको चाला, इससे अधिक नक्षत्र न आला॥
सबही ज्योतिषसे बहु जानों, तारा चले वेग अतिमानों।
रवि अरु शशि विमान को भाई, देव जु पैले चालै ताही॥

इन आदिक ज्योतिष पंच भेवा, सबही दास करें जिम सेवा।
पुन्यथकी ये पदवी पावैं, अशुभ जीव इस मग नहि आवै ।।

(सोरठा)

ज्योतिष असंख्य विमान, इक इक तहां जिन थान हैं।
ते पूजों सब आन, मन वच काय लगायके ।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकार ज्योतिषविमान संबंधि असंख्यात जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उर्ध्वलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनपूजा

(छंद पद्धरि)

दिवि कल्परु कल्पातीत जान, जहें पुण्यवन्त निवसै महान।
तहँ थान नमो जिनराज जेह, ते पूजों मैं बहु ठान नेह ।।

ॐ ह्रीं स्वर्गलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं स्वर्गलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं स्वर्गलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल मुनयानंद)

नीर शुभ त्रस बिना खीरदधि सम कही।
कनक पातर विषै धार लायो सही।

स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गंधधर चन्दनं मलय घसि लाइयो।
आप कर लेय उरमांहि हर्षाइयो।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

खण्ड बिन तंदुला ऊजले सारजी।
थाल भर आप कर, लेय सुखधारजी।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

फूल गंध सहित शोभ रंग सुखदायजी।
गूंथ तिन माल ले आइयो भायजी।
स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

लेय रस सार चरु कियो मनहारजी।
आइयो आप ढिंग भक्ति बहुधारजी।

स्वर्गवासी नमें थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

दीप तमहार बहुभार परकाशजी।
थाल भर लाइयो होय जिनदासजी।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

धूप दशगंधको मेल सुखदायजी।
खेवनेको चलो अति उमगायजी।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

श्रीफला लोंग खारक भला जानिये।
आदि फल और इन भक्तियुत आनिये।
स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

नीर गंध तंदुलै शुद्ध चरु लाइयो।
दीप अरु धूप फल अर्घ बनवाइयो।

स्वर्गवासी नमैं थान जिन जानियो।
जजों मन वचन तन होय अघ हानियो॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

(चाल जोगीरासा)

स्वर्गनिवासी देवविमान सु चौरासी लख जानों।
सहस सत्याणव ऊपर सेती इतनी संख्या मानों।
इतने ही इनमें जिनमंदिर बिना किये शुभकारी।
तिन सबको शुभ अर्घ चढाऊं मन वच धोक हमारी॥

ॐ ह्रीं स्वर्गवासी देवविमान सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

॥ प्रत्येक अर्घ ॥

(चौपई)

लाख बतीस सौधर्म सुजान, तिनमें इतने ही जिनथान।
आवागमन निवारण हार, तें सिध पूजों शिव-करतार॥

ॐ ह्रीं सौधर्मस्वर्ग संबंधी द्वात्रिंशतलक्ष विमानेषु जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ १॥

दूजे स्वर्गमांहि जे जान, तिनमें इक इक है जिनथान।
लाख अठाइस गिनती जोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं ईशानस्वर्ग संबंधी अष्टाविंशति लक्षविमानेषु जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ २॥

सनत्कुमार स्वर्गकि मांहि, बारह लाख विमान कहाई।
तिन सबमें इक इक जिन गेह, ते हों जजो ठान बहु नेह॥

ॐ ह्रीं सनत्कुमार संबंधी द्वादशलक्ष विमानेषु जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ३॥

स्वर्ग महेन्द्र कहा सुखकार, आठ लाख जानो सुरधार।
आवागमन निवारण हार, ते सिध पूजों शिव-करतार॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्रस्वर्ग संबंधी अष्टलक्ष विमानस्थित जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ४॥

तीजे युगल मांहि मन लाय, जान विमान लाख चव भाय।
इतने ही तिनमें जिनगेह, ते हों पूजों कर बहु नेह॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म-ब्रह्मोतरस्वर्ग संबंधी चतुर्लक्ष विमानस्थित जिन चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ५॥

(अडिल्ल)

लांतव युगल विमान प्रमाण बखानिये।
गिनती सहस्र पचास देवपुर मानिये।
तिन मांही जिनमंदिर है इक इक सही।
ते मैं पूजों मन वच तन पुण्य की मही॥

ॐ ह्रीं लांतव-कापिष्ठस्वर्ग संबंधी पंचाशत् सहस्र विमानस्थित जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ६॥

(पद्धरि)

चालीस सहस्र पंचम बखान, तिन एक एकमें जिनेन्द्र थान।
ते रतनमई शोभा अपार, ते पूजों मन वच अर्घ धार॥

ॐ ह्रीं महाशुक्रस्वर्ग संबंधि चत्वारिंशत् सहस्रविमानवासी जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ७॥

(चौपई)

छट्टे युगल तने सुविमान, षट सहस्र महा सुखथान।
तिन सबमें इक इक जिनगेह, ते हों जजों ठान बहु नेह॥

ॐ ह्रीं शतार-सहस्रारस्वर्ग संबंधि विमान प्रमाण षट् सहस्र जिन-चैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ८॥

(पद्धरि छंद)

दिवि आनतादि चव मांहि जोय, शुभ जान सात सौ ठांहि होय।
तिनमें इतने जिनथान मान, ते पूजों मन वच अर्घ आन॥

ॐ ह्रीं आनत-प्राणत-आरण-अच्युतस्वर्ग संबंधि सप्तशत विमानस्थित जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ६॥

ग्रैवेयक त्रय सो नव विमान, तिनमें तितने ही जिन सुथान।
ते रतनमई शोभा अपार, ते पूजों मन वच अर्घ धार॥

ॐ ह्रीं नव ग्रैवेयक संबंधी नवाधिकत्रयशत् विमानस्थित जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ १०॥

नव अनुदिशमें हैं नव विमान, तिनमें नव ही जिनभवन जान।
पूजैं अहमिंदर सबै जाय, हम पूजै यहाँ बहु भक्ति भाय॥

ॐ ह्रीं अनुदिश संबंधी नव विमानस्थित नव जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ ११॥

पंच अनुत्तर विमानन जान, बिगर किये जिन पंच थान।
जिन रूप समा आकार सोय, ते पूजों मन वच शुद्ध होय॥

ॐ ह्रीं पंच अनुत्तरसंबंधी पंच जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो अर्घ्यम्॥ १२॥

(छंद हरिगीतिका)

सब कल्प कल्पातीत देव विमानकी गिनती सही।
सब लाख चौरासी सित्याणव सहस तेइस पुनि मही।
तिन मांहि इक इक थान जिनके पाप हर तिनही धरा।
ते देव पूजों जाय सनमुख हम जजैं इह ते खरा॥

ॐ ह्रीं स्वर्गलोक संबंधी चतुरशीति लक्ष सप्तनवतिसहस्र त्रयोविंशति श्री जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यम्॥ १३॥

मानस्तंभका अर्घ

(छंद : सोरठा)

जल फल आदिक धीर, आठ द्रव्यको अर्घ लो।
मानस्तंभ-जिन धीर, चतुर दिश पूजा करो॥

ॐ ह्रीं उर्ध्वलोकके स्वर्ग संबंधी मानस्तंभ पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

देव सुरग वासी घने, महा पुण्यके थान।
तहं उपजत जिन धर्म धर, तिन कछु कह्यो बखान॥

(चाल मुनियानंद)

स्वर्गवासी सुरा दोय विधि जानिये, कल्पवासी रु कल्पातीत पहचानिये।
स्वर्ग षोडश सुरा नारि धर जोइये, कल्पवसु शीश सुरदेवी बिन होइये॥

कल्प है नाम सौधर्म ईशानजी, सनतकुमार माहेन्द्र शुभ जानजी।
ब्रह्मब्रह्मोत्तरा जुगल तीजा सही, लांतव कापिष्ट है जुगल सुख की मही॥

शुक्र महाशुक्र जुग पंचमों सारजी, जुगल सत्तार सहस्रार सुखकारजी।
आनता प्राणत सातमा जुग भया, आठमा आरणाच्युत जुगल जिन चया॥

नवगिरी अनुदिशा पंच अनुत्तर सही जीव पुण्यवान उपजे यही सुख मही।
दंड सौधर्मका सभा थानक सही, तास लम्बी धरा योजना सौ मही।
व्यास पचास शुभ जोजना मानिए तुंग जोजन कह्यो पौण सौ आनिए।
सभामंडप तने जान आगे सही, मणिमई पीठ जुत मानथम्भै मही।
मानथंभ व्यास इक जोजना जानिये, तास की तीन गुन परिधी प्रमानिये।

तुङ्ग छत्तीस जोजन भलो सुख मही, कोश बारह विषै धार बारह सही।
तिन विषै करंड झूले महा सुखकरा, ताखडी दंड खंभ बांधिये समखरा॥

कोश इक लंबके करंडिया है सही, पाव ही कोश चौड़े बने मन मही।
तिन विषे वस्त्र आभूषणा पाईये, निम्नित्त तीर्थेशके काढि हरि लाईये॥
स्वर्ग सौधर्म बिच मानथंभ जे कहे, करंड वस्त्र-आभरणके सदा भर रहे।
भरत क्षेतर विषे देव जिन अवतरे, इन्द्र सौधर्म ही रीति इनकी करे॥
करंड मानथंभ ईशान स्वर्गके सही, इन विषें वस्त्र-आभरण हैं जे कही।
काढि ईशान हरि भक्तितें आय है, क्षेत्र ऐरावता जिन निमित्त लाय है॥
स्वर्ग तीजे विषै मानथंभ मांहिजी, करंड तिन मांहि आभूषण पाहिंजी।
पूर्व सु विदेह में जे जिना अवतरे, स्वर्गपति ल्याय आभरण रीति करे॥
स्वर्ग माहेन्द्रमें मानथंभ जो सही, तिन विषे करंड आभूषणा सुखमही।
अपर विदेहमें होय जिनरायजी, लाय माहेन्द्र हरि धरै जिन पायजी॥
मानथंभ लूमते करंड तहां पाय है, योग्य जिनराय शुभ वस्तु तिन मांहि है।
ता थकी देव हरि सकल करि पूज है, जा सभी विनयतें पाप सब धूज हैं॥
मानथंभ पास उतपात ग्रह मानिये, आठ जोजन तनों तुङ्ग नभ आनिये।
व्यास ही आठ ही जोजना है सही, तासपै मणिमई दोय सज्या कही॥
तिन विषै इन्द्र ही आय उपजै सही, करै बहु पुन्यके पाय है वह मही।
फेर उतपाद गृह पास ही जानिये, बहु विनय सहित जिन भवन तहां मानिये॥
तुङ्ग बहु शिखर जुत मणिमई है सही, तिन विषै बिंब जिनराज समधुनि कही।
पूजि हैं हम सभी द्रव्य ले आव जी, मुख थकी भक्ति कर पुन्य उपजावजी॥
देव सज्या विषे ऊपजै जिम सही, सूर्य उदयाचले उदय हो इम कही।
काल तुच्छ मांहि तन धार पूरन लहे, गंध शुभ रूप सुर ऊपजे चिर रहे॥
उपजि करि सम्पदा देखि सुख पाय है, अवधितैं पूर्व परजाय समथाय है।
धर्मफल जान जिन जजैं उमगे सही, निर्मला जल सपरि भवन जिन जायही॥
देव समदृष्टि स्वयमेव जिन पूज है, तास फल फिर बहु संपदा पूर है।
और उपदेश मिथ्यामती जे सुरा, पूजि हैं देव जिन कार्य मुख्य यह करा॥

देव फिर आय जिन पूजि बहु सुख करे, पंच कल्याण जिनराज पूजन धरे।
सकल मधिलोक जिनथान सेवे सही, सर्व परबी विषें पूजि हैं जिनमही॥
मेरुतें पहल स्वर्ग बाल अन्तर कही, नाम इन्द्रक यह प्रथम ऋतुकी मही।
और जे ऊपरे सकल इन्द्रक कहे, असंख्य जोजन तने अन्तरै बनि रहे॥
नाम सर्वार्थसिद्ध अन्त इन्द्रक सही, द्वादश योजना मोक्ष अन्तर कही।
मध्यमें सप्त राजू सुरग थान है, ऊपरें मोक्ष ये सिद्ध जिनथान है॥
जीव इन मांहि सब पुण्य ते जाय हैं, वांच्छते सकल सुख आयु लग पाय है।
आदि और अन्त विस्तार घनो मानिये, देखिये वाणि जिन सकल तहां जानिये॥
स्वर्ग सुख थान महा पुन्यतैं पाइये, चाहिये जीव सुख भलो पुण्य लाइये।
पुन्यतैं सकल सुख आय करमें रहें, मानि जिन वानि उर नांहि संशय रहे॥

(दोहा)

स्वर्गथानमें जिन भवन, पूजत सुर है सोय।
हम इह भावें भावना, पूजत अरघ संजोय॥

ॐ ह्रीं स्वर्गलोक सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनेभ्यो पूर्णार्घ्यम्।

सिद्धलोक पूजा

(चाल जोगीरासा)

चेतन ज्ञान सरूप सदा सुख नाम लिये अघ जाये।
शुद्ध स्वभाव मूर्ति विन अञ्जन राग दोष नहिं पाये।
कर्म कलंक विना आतम इक, लोक शिखर पे राजे।
ऐसे सिद्ध अनंत सिद्धथल, थापि जजों शिव काजे॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्ध परमेष्ठी! अत्रावतरावतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्ध परमेष्ठी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्ध परमेष्ठी! मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद गीता)

प्रभो सुख सब होय मोकों, और कहा विनती करौं।
मैं जजों ते सिध चक्र सबही, लेय जल भव दुख हरों।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

शुभ लेय निरमल नीर चन्दन, बावना गंधित खरा।
धरि कनक झारी धार निजकर, पूजहूँ सब शिव धरा।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

बिन खंड उज्वल नोक जुत शुभ, भले अक्षत लाइये।
धरि भक्ति उर कर लेय अपने, सिद्ध चरन चढाइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

फूल सुरद्रुम सुभग लेकर, भले भावन आइये।
मदहरन मदन मनोजको सब, सिद्ध पूज कराइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

नैवेद्य मोदक सेव घेवर, सुभग फेनी रसमई।
इन आदि नेवज लेय निजकर, सिद्ध पूजन विधि ठही।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

तमहार दीपक धूम बिन जो, शोभ रतन समा धरे।
यह लेय कर उर भक्ति धरिके, सिद्धपद पूजन करे।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

धूप दशविधि अगर आदिक, गंध मेल सु आइये।
फिर भक्ति उर धर सिद्ध पूजन, मन वचन तन आइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

फल लोंग खारक श्रीफला शुभ, और अधिक मंगाइये।
धरि शुद्धभाव अनन्द उर कर, सिद्ध पूजन आइये।
ये लोक शिखर विराजते सिध, सकल विन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जाये, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

जल चन्दनाक्षत फूल चरु ले, दीप धूप फला भले।
कर अरघ सुन्दर आपने कर, सिद्ध पूजनको चले।
ये लोकशिखर विराजते सिध, सकल बिन मूरत सही।
तिस थान मोह मलान जावे, तीर्थ उज्ज्वल शुभ मही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

सिध लोकमें सुख जीव पावें, करमरज तिनके नहीं।
तिस टाम थोरे जीव हैं बहु, भीड किंचित् ना कही।
एक ही अवगाहनामें, सिद्ध जीव अनन्त कही।
दृगज्ञान आदिक पंच सुखके, जजों सब शिव सिधमही॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १०॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

ज्ञानावरणी करम जराय, पायो केवल ज्ञान सुभाय।
राजत लोक शिखरपै सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी-कर्मघातक लोकशिखर-विराजमान अनंतज्ञानप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

दर्शनावरणीकी क्षय लाय, केवलदरशनतैं दरशाय।
राजत लोक शिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणीघातक लोकशिखरस्थित अनंतदर्शनप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

कर्म वेदनी नाम निकन्द, बाधा रहित लह्यो आनन्द।
राजत लोक शिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मघातक लोकशिखरस्थित अव्याबाध-आनंदप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

मोह करमके मूल गमाय, सम्यक गुण तिन शुद्ध कराय।
राजत लोक शिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं मोहकर्मघातक लोकशिखरस्थित अनंतसुखप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

आयु करम क्षय कर भगवान, अवगाहन गुण पायो जान।
राजत लोकशिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं आयुकर्मघातक लोकशिखरस्थित अवगाहनगुणप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

नाम करम नास्यो जिनराय, सूक्षम गुण परगट करवाय।
राजत लोकशिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं नामकर्मघातक लोकशिखरस्थित सूक्ष्मत्वगुणप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

गोत्र करमके गोत गमाय, अगुरुलघु गुणको प्रगटाय।
राजत लोकशिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मघातक लोकशिखरस्थित अगुरुलघुत्वगुणप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

अन्तरायके नाशनहार, वीर्य अनन्त लहे शिवधार।
राजत लोकशिखरपे सोय, ते सिध पूजों अर्घ संजोय॥

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मनाशक लोकशिखरस्थित अनंतवीर्यगुणप्राप्त सर्व सिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

जयमाला

(दोहा)

तीन लोक चूड़ामणी, अष्टकर्म रज नांहि ।
नमों सोय नमनों मिटे, सिद्ध देव जग मांहि ।।१।।

(वेसरी छन्द)

सिद्ध देव शिवनारी भरता, भक्तनको निज थल सम करता ।
जिसो संग तैसो फल पावे, दीपकतें दीपक है जावे ।।२।।

सिद्ध अमूरत चेतन थानो, जाना सकल जिया सुध ज्ञानो ।
दर्श अनंत वीर्य अति भाई, सुखी अनंत काल चिर थाई ।।३।।

सूक्षम गुण निरबाध कहाई, अगुरुलघु गुणधारक सांई ।
अव्याबाध बाध नहिं कोई, और अनन्त आदि इन होई ।।४।।

अष्ट करम रजतें सिध दूरा, सिद्धलोक-थलमें सब पूरा ।
इक इक सिध अवगाहन मांही, सिद्ध अनन्तानन्त सु पांही ।।५।।

तीन कालमें जे सिध होई, सिद्ध लखै इक छिनमें सोई ।
इक इक सिध सब सिधमें ज़ानों, ऐसे अद्भुत केवल ज्ञानो ।।६।।

सिध सुख सो सुख जगमें नांही, उपमा जाकी कही न जाही ।
मनुष्य विषै चक्रीके मांही, होय सकल तैं सुख अधिकाही ।।७।।

चक्रीतैं सुख असंख्य बतानों, नागपती देवनके मानों ।
इनते असंख्य गुनों सुख गाई, कल्पदेव भोगत अधिकाई ।।८।।

इनतें सुख असंख्य गुण जानों, अहमिंदर देवनके मानों ।
इन सब ते असंख्य सिद्धनके, होय अनन्तगुणों सुख तिनके ।।९।।

जगमें इन्द्री सुख क्षयकारी, सिद्ध सुखी अन-इन्द्री भारी ।
सांचे जाने जग सुख पावे, ते सिध सांचो सब लिखवावे ।।१०।।

जग सुखते इन्द्रादिक भाई, देखत नाश होय थिति जाई।
सुखी सिद्ध त्रय कालिक जानों, भोगें अचल होय नहिं हानों ॥११॥
ऐसे सिद्ध सिद्धथल मांहीं, तिनपद धोक करों थुति लाहीं।
ते सिध करों सिद्ध मो काजो, सब दुख हरो अरज यह राजो ॥१२॥
सिद्धभक्ति भक्तन सुखदाई, वांछित सिद्ध होत है भाई।
इनकी थुति जानों शिव थानों, करो भव्य श्रद्धा जिन मानों ॥१३॥
सिद्ध चक्र सबको सुखदाई, पूजों अर्घ ठांनि थुति लाई।
ता फल होय न जग अवतारा, और कहा फल लहिये भारा ॥१४॥

(दोहा)

ऐसे सिद्धन ठान थुति, अरघ लेय कर सोय।
जजों पांय मन वच सही, हर बाधा भवि लोय ॥१५॥

ॐ ह्रीं लोकशिखरस्थित अनन्त सिद्धेभ्यो जयमाला पूर्ण महार्घ्यं निर्व-पामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

जिनालय बहत्तर लाख सात कोडी, तहाँ आटसै विम्ब तेतीस कोडी।
छिहत्तर कहै लाख सुन्दर सुहाए, नमों बिम्ब पातालके माथ नाए ॥
प्रथम जम्बूद्वीप विषैं जिनदिवाले, अठत्तर अक्रीतम महा शोभवाले।
सहस आट शत चार चौवीस गाये, तहाँ बिम्ब राजे तिने सीस नाये ॥
दुती धातकी खंडके जिनगृहाले, अटावन अधिक एक शत विशाले।
सहस सत्र चौसट तहां बिम्बदरसी, नमों हाथ धर माथ जिन गुन समरसी ॥
तिरजन्च धरा क्षेत्रमें चैत्य सोहें कहे दुगुन बत्तीस लख चित्त मोहें।
सहस षट् शतक नव द्वादश बखाने, नमों हाथ धर माथ प्रतिबिम्ब जाने ॥
असंख्यात व्यंतर विबुध-ज्योतिषनके, जिनालय असंख्यात अविचल सबनके।
असंख्यात जिनबिंब राजैं तिनोंमें, नमो हाथ धर माथ अरजी करों मैं ॥
प्रथम नर्क ते उर्ध्वगृह लख चुरासी, सहस सतानवे तेईस सर्वभासी।
प्रति कोडि इक नव छिहतर लखासी, अटत्तर सहस चारसै अरु चुरासी ॥
नदी सरस सीता सितोदा तडाग्रे, सहस शैल कंचन कहे तिन सिराग्रे।
अद्भुत महान सहस आनंदकारी, तिनोंको जु अष्टांग वंदना हमारी ॥
प्रथम भरत नरइन्द्र कैलाश कूटे, तहां बिम्ब निर्मापि अघवृन्द छूटे।
बहुर भव्य जीवन करे मध्यलोके, तिन्हें प्राप्त ही सदा नमें सुक्ख होते ॥
महा एक सतक क्षेत्र सत्तर जु मुक्ता, नमों पंचकल्यानक सार जुक्ता।
कहे कृतकृत्य जिनालय त्रिलोकं, सबै बिम्ब राजे हृदै धार धोकं ॥
अतीता अनागत कहे वर्तमानं, जिनेन्द्रादि रत्नत्रयं भूषितानं।
जगतमें कहे सार तीरथ महानी, नमें सो सेवक सब अष्टांग आनी ॥

ॐ ह्रीं तीनलोक संबंधी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभ–विराजमान श्री सीमंधरजिन-पूजा

(गीता छंद)

महा पावन बहु सुहावन विदेहभूमि जानिये।
तहां मानस्थंभ लखते मान मानिन हानिये।
तासु मूल जिनेश प्रतिमा देंखि हरि पूजा करी।
करतो आह्वानन दास प्रभु ईत आय अब तो पग धरी॥

(दोहा)

चौदिश मानस्थंभकी, जिनप्रतिमा शिर नाय।
करत आह्वानन जोरि कर, तिष्ट तिष्ठ इत आय॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र अवतर अवतर! संवौषट्! (इत्याह्वाननं)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! (इति स्थापनं)। अत्र मम सन्निहितो भव भव! वषट्! (इति सन्निधिकरणं)

(त्रोटक छंद)

शुचि नीर हि गंग नदी भरिये, अरु कुंभन प्रासुक के करिये।
चतुर दिश मानस्थंभ कहा, हरि पूजि जिनेश्वर हर्ष लहा॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये बिराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन लेहु खरो, घसि कुंकुम मिश्रित कुंभ भरो।
चतुर दिश मानस्थंभ कहा, हरि पूजि जिनेश्वर हर्ष लहा॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जीरक श्याम अखंड लियो, परछालित थारहि हेम कियो।
चतुर दिश मानस्थंभ कहा, हरि पूजि जिनेश्वर हर्ष लहा॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेंद्रदेवाय अक्षतान् निर्व०

वर बेल चमेलि जुहि नवरी, कमलादिक लै चरु थाल भरी।
चतुर दिश मानस्थंभ कहा, हरि पूजि जिनेश्वर हर्ष लहा॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय पुष्पं निर्व०

खुरमा खजला वर मोदक जू, रसपूर क्षुधागद खोदक जू। च०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय नैवेद्यं निर्व०

कदलीसुत औ घृतके दियरा, जिन होत उदोत तमा विदरा। च०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय दीपं निर्व०

वर धूप लई दशगंध खरी, जसु गंध लहे अलि नृत्य करी। च०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय धूपं निर्व०

सहकार अनार छुहार खरे, नरियार बदाम हि थार भरे। च०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय फलं निर्व०

जल आदिक आठ हु द्रव्य लिया, इकठी भरि थार हि अर्घ किया। च०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेंद्रदेवाय अर्घं निर्व०

जयमाला

(छंद त्रिभंगी)

दिश चारि सुहावन अति हि पावन मन हुलसावन जान कही।
लखि मानस्थंभा होत अचम्भा तहं जिनबिंबा पूज चही।
सुरपति सुर हूजे जिनपद पूजे आंनद हूजै मोद लही।
खग नर मुनि आवै पूज रचावैं जिनगुण गावैं दास तहीं॥१॥

(पद्धरी छंद)

जै मानस्तंभ कह्यो बखान, तिन नमन करौं जुग जोरि पान।
है ताको वर्णन अति विशाल, जिहि सुनत कालिमा जात काल॥२॥

जै पहिली गलीके बीच मांहि, दरवाजे चारि तहां बतांहि।
तहं तीन कोट कीन्हे बखान, तिनपाहिं ध्वजा लहरैं महान ॥३॥

पहिला दुजा शुभ कोट जान, सुन कोट तीसरेका बयान।
है कोट बीचमें भूमि थान, तहं बने सु वन शोभायमान ॥४॥

तिनमें पिक कोकिल करै अलाप, जिन शब्द सुनत छूटैं कलाप।
तहं लोकपालके नगर जान, रमणीक महा शोभायमान ॥५॥

आभ्यंतर तीजे कोट जान, तहं तीन पीट कीन्ही बखान।
सो त्रै कटनी युत शोभकार, वैडूर्य मणिनकी कांति धार ॥६॥

ता ऊपर मानस्तंभ जान, है मूल मांहि चौकोर वान।
है ऊपर गोलाकार रूप, दैदीप्यमान शोभित अनूप ॥७॥

द्वै सहस पहल तामें गनाय, अरु वज्रमई नीचे बताय।
तसु मध्य फटिकमय कह्यो गाय, मणि वैडुरज सम ऊर्ध्व जाय ॥८॥

है तापर कमलाकार रूप, शोभै कलशा तापर अनूप।
धुज दंड तासु उपर बताय, जा पवन लगे जगमग कराय ॥९॥

शुभ छत्र चमर घन्टा बखान, मणिमाला माला सुभग जान।
सो मणि अनेक मय शोभघार, ऐसा मानस्थंभ कह विचार ॥१०॥

प्रति मानस्थंभकी दिशन चारि, है चारि बावरी पूरी वारि।
दिश पूरव मानस्थंभ तीर, नंदा नंदोत्तरा कही धीर ॥११॥

हैं नंदवती नंदघोष जान, दिश चारहुमें क्रम-सों बखान।
दक्षिण दिश मानस्थंभ पास, विजया वैजंयती नाम जास ॥१२॥

कह जयंति अपराजिता जान, दिश चारहुमें क्रमसों बखान।
पश्चिम मानस्थंभ चहूं ओर, अशोक सुप्रतिबुद्धाहि जोर ॥१३॥

है कुमुदा पुंडरिका सुजान , दिश चारहुमें क्रमसों बखान।
उतर मानस्थंभ चहूं ओर, हृदया नंदा महनंद जोर ॥१४॥

सुप्रबुद्धा परभंकरी सुजान, दिश चारहुमें क्रमसों बखान।
इमि सोरह वापी कही सार, चार हु मानस्थंभ ओर चार ॥१५॥
है नीर मांहि नीरज फुलान, मानहु निज नैना भू खुलान।
जिनराज विभव देखन अपार, बहु नैन धारि कीन्हों शिंगार ॥१६॥
तिन कमलन पर जो अलि गुंजेत, नैनांजनवत बहु शोभ देत।
मणिमय पैडी युत शोभदाय, तहँ हंस चकव क्रीडा कराय ॥१७॥
तिन पार्श्व मांहि जुग कुंड गाय, कंचन मणिमय दीन्हों बताय।
जो पूजन श्री जिनदेव जायँ, ते धोवत तिन जल लेय पायँ ॥१८॥
इक वापी के संग कह्यो गाय, द्वै कुंड जडित मणि शोभदाय।
है शोभा वैभव जो महान, तिहि कौन सकैं कवि करि बखान ॥१६॥
मानस्थंभ मूलहि दिशन चार, प्रतिमा श्री जिनवरकी निहार।
तिन पूज्यो सुरपति हर्ष धार, करि नृत्य ताल स्वरको सम्हार ॥२०॥
सननं सननं बाजै सितार, घननं घननं ध्वनि घंट धार।
द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग, करताल तबल अरु मूहचंग ॥२१॥
छम छम छम छम नूपुर बजाय, क्षण भूमि क्षणक आकाश जाय।
जहँ नाचत मघवा आप जान, तिहि शोभा को वरणै महान ॥२२॥
इमि नृत्य गान उत्सव महान, करि पूजा किय आगे पयान।
लै पंच रतनमय रंग महान, किय मानस्थंभहि दीप्तमान ॥२३॥
जा लखतै मानिन मान जात, जुग हाथ जोर शिरको नवात।
तासों मानस्थंभ जान नाम, सार्थक कीन्हो शोभाभिराम ॥२४॥
विस्तार मूल सूची प्रमान, नव शत नब्बे वसु धनुष जान।
छः सहस धनुष ऊंचा सुजान, बारह योजनसों लखै मान ॥२५॥
जिमि पूरवदिश को है कहाहि, तिमि दक्षिण पश्चिम उत्तराहि।
तिन कन्हईलाल सुत जोरि हाथ, भगवानदास नमै नाय माथ ॥२६॥

(धत्तानंद छंद)

मानस्थंभ माला अतिहि विशाला जे भवि निज कंठै धरई।
ते होय खुशाला लहि शिवबाला फेरि न या जगमें भ्रमई॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ ❀ ❀

मानस्तंभविराजमान श्री सीमंधरजिन-पूजा

(अडिल्ल छंद)

फिर सिवान पर चढ सुरपति तहाँ पेखिये।
धूलीसाल सु कोट नयन भरि देखिये॥
विजै नाम दरवाजे भीतर जायके।
मानस्थंभ जिनेश जजै हरखायके॥

(दोहा)

मानस्थंभ सु मूलमें प्रतिमा श्री भगवान।
दे प्रदक्षिणा तीन जो पूजत इन्द्र सुजान॥

पूर्व दिशामें विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(अडिल्ल छंद)

मानस्थंभ अनुपम सुंदर सोहनो।
मान रहित सब होय देख मन मोहनो॥
पूरव दिशको जान परमसुखदाय जू।
पूजत मन वच काय भविक सुख पाय जू॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्। (इत्याह्वाननं)।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः (इति स्थापनं)।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधिकरणं)।

(अडिल्ल)

पद्मद्रह को नीर सु उज्ज्वल लीजिये, सनमुख ह्वै जिनराज धार शुभ दीजिये।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर गारि कपूर मिलाइये, श्री जिन चरण चढाय परम सुख पाइये।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद किरन सम उज्ज्वल तंदुल पावने, पुंज धरों जिन आगे परम मन भावने।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमलकेतुकी बेल चमेली वास है, श्री जिनके पद पूजि काम सब नाश ह्वै।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गूंझा फैनी सुहाल सुमोदक साजही, पूजि जिनेश्वर पाय क्षुधा दुख भाजही।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनिमय दीप अनूप सु जगमग जोत है, मोह अंध भयो नाश जय जय होत है ।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंध सु लेकर जिनपद सेइये, अष्ट कर्म हो नाश सु अग्निमें खेइये ।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग सुपारी पिस्ता लावही, प्रभू चरण चढाय सु शिव फल पावही ।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन इत्यादि सु अर्घ संजोयके, जिन पूजत भविलाल सु हरखित होयके ।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ ❀ ❀

दक्षिण दिशामें विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(अडिल्ल)

मानस्थंभ अनूपम सुंदर देखिये ।
सुर नर मुनि मन हरत सुनैननि पेखिये ।।
समवशरनमें दक्षिण दिशा सुहावनौ ।
पूजत भविजन लोग सु जिनगुन गावनौ ।।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव ! अत्र

अवतर अवतर! संवौषट्। (इत्याह्वानं)। ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)। ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (इति सन्निधिकरणं)।

(सुंदरी छंद)

सरस उज्ज्वल नीर सु लीजिये, धार श्री जिनचरण सु दीजिये।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय सारस केशरि गारिये, पूजि जनमदाह निवारिये।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद जोत समान सु अक्षतं, पुंज देत अक्षैनिधि गच्छतं।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल कुंद गुलाब सु लाइये, मदन नाशि सु हर्ष उपाइये।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मोदक व्यंजन साजही, क्षुधारोग सु देखत भाजही।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मणिमय जगमग जोत है, मोह नाश सु जय जय होत है।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कुमकुम गंध मिलावही, खेय कर्म सु दुष्ट जरावही।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सु उत्तम सुंदर लै धरो, जिन सु पूजत शिवनारी वरौ।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धरत अर्घ सु भव्य बनायके, सफल करत सु नरभव पायके।
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये, मानस्थंभ जिनालय पूजिये॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ ❀ ❀

पश्चिम दिशामें विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(सुंदरी छंद)

परम पावन सुंदर देखिये, सरस सुंदरता कर पेखिये।
लसत मानस्थंभ सुहावनो, दिश सु पश्चिममें मन भावनो॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वानं)।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्! (इति सन्निधिकरणं)।

(सोरठा)

उज्ज्वल नीर सु आनि रतन कटोरीमें धरो।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूंजा करों ॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर जान जिन पूजत भवदुख हरो।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों ॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल चंद समान पुंज सु जिन आगे धरों।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों ॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकी आन देखत काम सु थरहरौ।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करौ ॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत भांति पकवान क्षुधा रोग देखत डरों।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों ॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनिमय दीप प्रमान मोह देख आपु हि डरौ।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करौ॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांग सु जान खेवत आठों कर्म जरैं।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करौं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल सुखदाय पूज जिनेश्वर शिव वरौ।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करौं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठो दरव सु आन अर्घ चढाय सु जग तरों।
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करौं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ ❀ ❀

उत्तर दिशामें विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(दोहा)

श्री जिनमानस्तंभको पूजत मन वच काय।
उत्तर दिशा सुहावनी जय जय जय जिनराय॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वानं)। ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां

विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)। ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधिकरणं)।

(जोगीरासा)

कंचन झारी उज्ज्वल जल ले श्री जिनचरण चढाऊँ।
भाव सहित श्री जिन पूज जनम जनम सुख पाऊँ।
मानस्तंभ सोहनो सुंदर उत्तर दिशा सुहावे।
पूजत हरष होत भवि जीवन सुर-शिवलक्ष्मी पावे॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमकुम केशर सरस सुवासी खासी लेकर धारो,
भव-आताप विनाशन कारन श्री जिनपद पर वारो;...मान०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल उनहार सु तंदुल कान्ति चंदकी धारै,
पुंज करो जिनवरपद आगे आछे पद विस्तारौ;...मान०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकी बेल चमेली भंवर गुंजारे जापै,
पूजत श्री जिनचरन मनोहर काम न आवै तापै;...मान०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी घेवर तुरत सुधीके लाडू गूंझा लावै,
क्षुधारोग निरवारन कारन श्री जिनचरन चढावै;...मान०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनिमय दीप अमोलक ले करि कनक रकेबी धरिये।
मोह अंधके नाशन कारन जगमग जोत उजारे।
मानस्तंभ सोहनो सुंदर उत्तर दिशा सुहावे।
पूजत हरष होत भवि जीवन सुर-शिवलक्ष्मी पावे॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंध समूह अनूपम खेय अग्निमें डालो,
अष्ट कर्म ये दुष्ट भयानक इनको तुरतई जालो;...मान०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग लाइची सुंदर पिस्ता जाति घनेरा,
पूजि जिनेश्वर शिवफल पईये सुरगादिक सुख केरा;...मान०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ दर्व ले अर्घ संजोयो पूजो श्री जिन भाई,
भवसागरतें पार उतारो जै जै जै जिनराई;...मान०

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा छंद)

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अन्त॥१॥

(छंद पद्धडी)

जय जय सीमंधर जिन गुन महान, तुम पदको मैं नित धरों ध्यान।
जय गरभ जनम तप ज्ञानजुक्त, वर आत्म सुमंगल शर्म भुक्त॥२॥

जय चिदानन्द आनन्दकन्द, गुनवृन्द सु ध्यावत मुनि अमन्द ।
तुम जीवनिके विनु हेत मित्त, तुम ही हो जगमें जिन पवित्त ॥३॥

तुम समवसरणमें तत्त्वसार, उपदेश दियो है अति उदार ।
ताकों जे भवि निजहेत चित्त, धारै ते पावै मोच्छवित्त ॥४॥

मैं तुम मुख देखत आज पर्म, पायो निज आतमरूप धर्म ।
मोकों अब भौभयतें निकार, निरभयपद दीजे परम सार ॥५॥

तुम सम मेरो जगमें न कोय, तुमहीतैं सब विधि काज होय ।
तुम दयाधुरंधर धीर वीर, मैंटी जगजनकी सकल पीर ॥६॥

तुम नीतनिपुन विन रागदोष, शिवमग दरसावतु हो अदोष ।
तुम्हरे ही नामतने प्रभाव, जगजीव लहैं शिव-दिव-सुराव ॥७॥

तातैं मैं तुमरी शरण आय, यह अरज करतु हों शीश नाय ।
भवबाधा मेरी मेट मेट, शिवतियसों करि भेट भेट ॥८॥

जंजाल जगतको चूर चूर, आनंद अनूपम पूर पूर ।
मति देर करो सुनि अरज एव, हे दीनदयाल जिनेश देव ॥९॥

मोंको शरना नहिं और ठौर, यह निश्चै जानों सुगुन-मोर ।
वृन्दावन वंदत प्रीति लाय, सब विघन मेट हे धरमराय ॥१०॥

(छंद धत्तानंद)

जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं, श्रीजिनधर्मं उपदेशा ।
तुम दयाधुरंधर विनतपुरंदर, कर उरमंदर परवेशा ॥११॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ ❀ ❀

जयमाला

(सवैया इकतीसा)

सीमंधर आदि जिन राजत विदेहमांही।
पांचसै धनुष वपु धारे भगवंत हैं।
कोटि पूर्व आयु जान नंत ज्ञान दर्शवान।
सुख है अनंत जाके वीरज अनंत हैं॥
सिंहासन आसन पै आप श्री विराजमान।
खिरैं तिहुं काल वाणी सुने सब संत हैं।
अब हैं वरतमान ध्यावें नित इन्द्र आन।
मैं हुं बंदूं बीस जिन शिवतियकंत हैं।१।

(पद्धरी छंद)

जय परनिमित्त व्यवहार त्याग, पायो निज शुद्धस्वरूप भाग।
जय जगपालन विन जगतदेव, जय दयाभाव विन शांतिमेव ॥२॥

परसुख-दुखकरण कुरीति टार, परसुख-दुखकारण शक्तिधार।
फुनिफुनि नवनव नित जन्मरीत, बिन सर्वलोक थापी पुनीत ॥३॥

जय लीलारासविलास नाश, स्वाभाविक निजपद रमणवास।
शयनासन आदि क्रियाकलाप, तज सुखी सदा शिवरूप आप ॥४॥

बिन कामदाह नहीं नार भोग, निरद्वन्द निजानंद मगन योग।
वरमाल आदि शृंगार रूप, बिन शुद्ध निरंजन पद अनूप ॥५॥

जय धर्म भर्मवन हन कुटार, परकाश पुंज चिद्रूप सार।
उपकरण हरण दव सलिलधार, स्वैशक्ति प्रभावहु पय अपार ॥६॥

नभसीम नहीं अरु होत होउ, नहीं काल अंत लहो अन्त सोउ।
पर तुम गुणरास अनंतभाग, अक्षयविधि राजत अवधि त्याग ॥७॥

आनंद जलधि धारा प्रवाह, विज्ञानसुरी मुखद्रह अथाह।
निज शांति सुधारस परम खान, समभाव बीज उत्पत्ति थान॥८॥

निज आत्मलीन विकलप विनाश, शुद्धोपयोग परिणतिप्रकाश।
दृगज्ञान असाधारण स्वभाव, स्पर्श आदि परगुण अभाव॥६॥

निज गुणपर्यय समुदाय स्वामि, पायो अखंड पद परम धाम।
अव्यय अबाध पद स्वयं सिद्ध, उपलब्धि रूप धर्मी प्रसिद्ध॥१०॥

एकाग्रग्रूप चिंता निरोध, जे ध्यावें पावें स्वयं बोध।
गुण मात्र संत अनुराग रूप, यह भाव देहु तुम पद अनूप॥११॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेंद्रदेवाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ ❀ ❀

चित्र - ९

तीन लोक

संकेत → को॰ = कोश
यो॰ = योजन

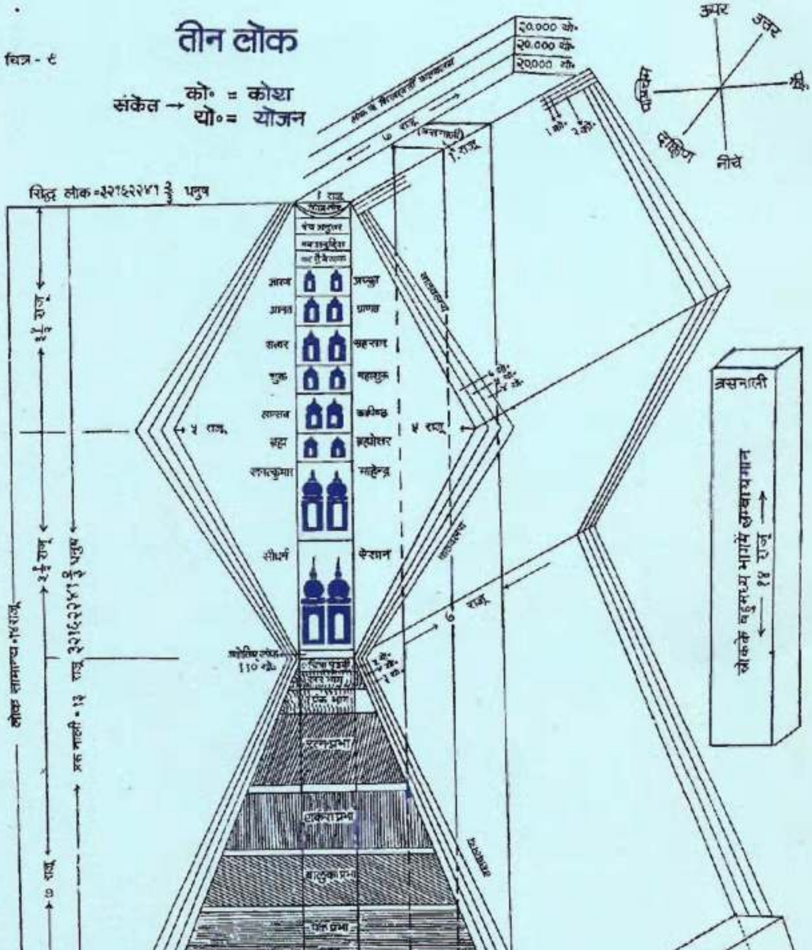

※ लोक के नीचे वाले एक राजू प्रमाण कलकल नामक स्थावर लोक को चारों ओर से घेर कर अवस्थित ६०,००० यो॰ मोटा वातवलय।